ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 मार्च 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 25 मार्च 2018 से 31 मार्च 2018

चैत्र शु.– 09 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 59, अंक 12, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

मेहरचंद महाजन डी.ए.वी. महिला कॉलेज, चण्डीगढ़ का स्वर्णिम जयंती वर्ष समारोह

भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. रामनाथ कोविन्द ने मेहरचंद महाजन महिला महाविद्यालय, चण्डीगढ़ के पचास वर्ष पूरे होने पर महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती ब्लॉक की आधारशिला रखी। इस अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि शिक्षा और सामाजिक सुधार किसी समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने का सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की ओर इंगित करते हुए कहा कि आर्य समाज आचरण और विचार से श्रेष्ठजनों का समाज है और इसकी स्थापना उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द ने विशेष अभिप्राय से की थी। बेटियों की शिक्षा के लिए स्वामी दयानन्द ने कन्या विद्यालयों की स्थापना की और इसी श्रृंखला में डी.ए.वी. के अनेक शिक्षा संस्थान स्त्री शिक्षा को समर्पित हैं।

महामहिम राष्ट्रपति ने डी.ए.वी. की शिक्षा–पद्धति में परंपरा और आधुनिकता, ज्ञान और विज्ञान, अंग्रेज़ी और हिन्दी और भारतीय ज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए भारत–रत्न से अलंकृत पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जैसे प्रखर व्यक्तित्व को शिक्षा प्रदान करने के लिए हार्दिक बधाई दी और बड़े गर्व से कहा कि महामहिम को स्वयं डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में उच्चशिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द, मेहरचंद महाजन डी.ए.वी. महिला कॉलेज, चण्डीगढ़ के स्वर्ण जयंती समारोह पर मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्‌बोधन दे रहे थे। सेवा के स्वर्णिम पचास वर्ष पूर्व होने पर इस महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्यों का आदर सहित स्मरण करते हुए महामहिम राष्ट्रपति ने प्रबंधक समिति, प्राचार्या और शिक्षक तथा विद्यार्थी वर्ग को बधाई दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बालिकाएँ उच्चतर शिक्षा की तरह प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में भी आगे आएँगी। पुरुष प्रधान समाज में अपनी निष्ठा, समर्पण और कर्मठता के बल पर नई बुलंदियों को छूने वाली महिलाओं के उदाहरण देते हुए महामहिम ने कहा कि आजकल के माता–पिता अपनी बेटियों को वैचारिक और सामाजिक स्वतंत्रता दें और उन्हें अनुभव प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

महामहिम ने चण्डीगढ़ शहर की सुन्दरता, योजनाबद्ध विकास और रिसाइकलिंग जैसे क्षेत्रों में की गई पहल के लिए प्रशंसा की।

पाँच दशकों में मेहरचंद महाजन कॉलेज द्वारा उत्तर भारत में महिला शिक्षा क्षेत्र में दिए गए योगदान को आदर्श बताते हुए महामहिम राष्ट्रपति ने आशा व्यक्त की कि आज से पचास वर्ष बाद जब इस कॉलेज का शताब्दी समारोह होगा तो इसका नाम भारत के शैक्षिक मानचित्र पर शीर्षस्थ रूप में दिखाई देगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने समारोह को न्यामूर्ति मेहरचन्द महाजन के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाते हुए डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने समारोह को न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि बताते हुए विद्यार्थियों को अज्ञान के अंधकार को दूर करने के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाते हुए जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक सोच का प्रसार करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर तीन राज्यों के महामहिम राज्यपालों द्वारा अपनी उपस्थिति देकर इस अवसर को गरिमा प्रदान की गई।

दीप–प्रज्ज्वलन से आरंभ हुए इस भव्य समारोह में इस कॉलेज की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विजय दर्ज करने वाली छात्रा–खिलाड़ियों को सम्मानित करने के साथ–साथ राष्ट्रीय प्रशासनिक सेवाओं में चयनित पूर्व छात्राओं को भी सम्मानित किया गया।

डी.ए.वी. रूपनगर में मनाया आशीर्वाद दिवस

डी.ए.वी. सी. सै. स्कूल रूपनगर, रोपड़ में बोर्ड की परीक्षा के सम्बन्ध में आशीर्वाद दिवस मनाया गया। यह दिवस यज्ञ द्वारा सम्पन्न किया गया। मैनेजर श्री रविन्द्र तलवाड़ तथा प्रिंसीपल संगीता रानी की देख रेख में यह कार्यक्रम सफल हुआ। इसके उपरान्त उन्होंने बच्चों को अच्छे अंक लेकर पास होने के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित किया। वहीं बच्चों ने भी अध्यापक वर्ग का धन्यवाद किया। उन्होंने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि स्कूल की यादें उनके मन में हमेशा समाई रहेंगी। इस अवसर पर समूह स्टॉफ उपस्थित था।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 25 मार्च 2018 से 31 मार्च 2018

हिरण्य-धारण

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम्।
इद् हिरण्यं वर्चस्वज्, जैत्रायाविशतादु माम्।।

यजु ३४.५०

ऋषिः **दक्षः**। देवता **हिरण्यं तेजः** छन्दः **भुरिग् उष्णिक्।**

● **(आयुष्यं)** आयु के लिए हितकर, **(वर्चस्यं)** ब्रह्मवर्चस को प्राप्त कराने वाला, **(रायस्पोषं)** ऐश्वर्य का पोषक **(औद्भिदं)** (शत्रुओं, विघ्न–बाधाओं एवं दुःखों को) उद्भिन्न कर देने वाला **(इदं)** यह **(वर्चस्वत्)** आत्म–कान्ति से युक्त **(हिरण्यं)** हिरण्मय तेज **(जैत्राय)** विजय के लिए **(मां)** मुझमें **(आविशतात् उ)** प्रविष्ट होवे।

● संसार के युद्ध–क्षेत्र में शत्रुओं, विघ्न–बाधाओं और दुःखों से संघर्ष करते हुए मुझे विजय प्राप्त करनी है। यदि मैंने विजय का उपाय न किया तो शत्रु मुझे निगल जायेंगे, बाधाएँ एक पग भी आगे न बढ़ने देंगी, दुःख निरन्तर कचोटते रहेंगे। इन सब पर विजय पाने के लिए आवश्यक है कि मैं 'हिरण्य' धारण करूँ। 'हिरण्य' सुवर्ण का नाम है। सुवर्ण तेजस्वी होता है, अतः ज्योति या तेज को भी 'हिरण्य' कहते हैं। मैं अपने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा में 'ज्योति' को धारण करूँगा। शरीर को स्वस्थ, सबल, तेजस्वी बनाऊँगा। मन को शिव संकल्पवाला, अडिग, तेजोमय बनाऊँगा।

बुद्धि को त्वरित गति से सही निश्चय पर पहुँचनेवाली, शक्तिशालिनी, भास्वती बनाऊँगा। आत्मा को बलवान, विवेकशील, ज्योतिष्मान् एवं वर्चस्वी बनाऊँगा। अब तक मैं व्यथे ही सुवर्ण के आभूषण बनवाकर अंगुली, कलाई, कान आदि शरीर के किसी अंग में पहनकर यह मानता था कि मैंने 'हिरण्य' धारण कर लिया। पर आज मुझे ज्ञात हो गया है कि असली हिरण्य तो ज्योति या तेज है, जिसे अंग–अंग में धारण कर लने से मनुष्य अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है। शरीर के एक बहुमूल्य तत्त्व 'वीर्य' को भी शास्त्रकारों ने 'हिरण्य' कहा है। इस 'वीर्य' या 'रेतस्' को अनावश्यक रूप से प्रस्खलित न कर शरीर में धारण कर लेना एंव 'उर्ध्वरेताः' बन जाना ज्योति या तेज की प्राप्ति का एक सफल उपाय है। यह ज्योति, तेज और वीर्य रूप हिरण्य का धारण दीर्घ एवं उत्तम आयु को देनेवाला है, ब्रह्मवर्चस को प्राप्त करनेवाला है, भौतिक तथा आध्यात्मिक ऐश्वर्य की पुष्टि को देनेवाला है। यह 'औद्भिद' है, बीज का अंकुर जैसे भूमि की परत को फाड़कर ऊपर आ जाता है, वैसे ही यह सब प्रकार की भौतिक और मानसिक रूकावटों को, विविध दुःखों और पीड़ाओं को एवं बाह्य और आन्तरिक रिपुओं को उद्भिन्न करके उत्कर्ष की ओर ले जानेवाला है। यह 'हिरण्य' मेरे अन्दर प्रवेश करे, प्रचुरता और तीव्रता के साथ प्रवेश करे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने "तेते पाँव पसारिये, जेती लम्बी सौर" पर कथा सुनाते हुए कहा जितनी आय है, उससे कम खर्च करो। अधिक व्यय करोगे तो काम नहीं चलेगा। तुम्हारा अपना ही खर्च पूरा नहीं होगा तो दूसरे की सहायता तुम क्या करोगे! "कबीरा गरब न कीजिये" पर कथा सुनाते हुए कहा अभिमान से बचकर परिश्रम और ईमानदारी से सेवा करें, क्योंकि अभिमान ही पाप का मूल है। "संन्यास का अर्थ–सर्वत्याग" पर कथा सुनाते हुए कहा गेरुवे वस्त्रों में बहुधा अब वैराग्य और तप दिखाई नहीं देता, जो पूर्व–काल में था। संन्यास का अर्थ है– सर्वत्याग, और सर्वत्याग या पूर्ण वैराग्य के बिना मुक्ति का अधिकारी कोई नहीं बन सकता।

–आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

संन्यासी के लिए तीन आज्ञाएँ

महाराज गोपीचन्द अपने देश में शासन करते थे। प्रत्येक सुख विद्यमान था। तभी गुरु गोरखनाथ घूमते–घूमते राजा के महल में जा पहुँचे। राजा ने उनका उपदेश सुना तो वैराग्य हो गया। अपनी माता से बोले–"माँ! मैं संन्यास लेना चाहता हूँ।"

माँ ज्ञानवती थी। उसने कहा–"यदि तेरा मन दृढ़ है तो अवश्य ले ले संन्यास, परन्तु पहले अपने गुरु के साथ कुछ समय रहकर देख। यदि समझे कि मन को शान्ति मिलती है, तो संन्यासी हो जाना।"

गोपीचन्द ने ऐसा ही किया। राज्य त्यागकर गुरु के साथ चल पड़े। प्रभु–भजन का आनन्द आया तो अपना वेष भी बदल लिया; संन्यासी हो गए। देश–देश में घूमते हुए वे फिर अपने देश में वापस आए तो भिक्षा का पात्र लेकर महल में पहुँचे। जाकर आवाज़ दी–"अलख निरंजन!"

माँ ने इस आवाज़ को सुना। भागती हुई द्वार पर आई। आश्चर्य के साथ बोली–"अरे गोपी!"

गोपीचन्द भिक्षा के पात्र को आगे करके बोले–"माँ! मैं भिखारी हूँ, भिक्षा लेने आया हूँ।"

माँ ने सोचते हुए कहा– "ठहर, मैं तुझे भिक्षा दूँगी।" अन्दर जाकर वह चावल के तीन दाने ले आई। एक–एक करके तीनों दाने भिक्षा–पात्र में डाल दिए।

गोपीचन्द ने आश्चर्य से उन दानों को देखा; बोले–माँ! मैं इस भिक्षा का अर्थ नहीं समझा?"

माँ ने कहा–"नहीं समझा तो सुन! इनमें प्रत्येक दाना एक आज्ञा है। तू संन्यासी हो गया, फिर भी मैं तेरी माँ हूँ। मेरी आज्ञा का पालन करना।"

गोपीचन्द बोले–"क्या आज्ञा है माँ?"

माँ ने कहा– "पहली आज्ञा यह है कि जैसे तू घर में सुरक्षित होकर रहता था, वैसे ही बाहर भी रहना!"

गोपीचन्द बोले–"परन्तु यह कैसे हो सकता है माँ? मैं अब राजा नहीं; सिपाही और मंत्री नहीं रख सकता पहरा देने के लिए।"

माँ ने कहा–"सिपाही और मंत्रियों की आवश्यकता नहीं, परन्तु स्मरण रखो कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के डाकू हर समय तेरे आसपास रहते हैं। उनसे बचने के लिए सत्संग का, सद् विचार का, सद् आहार का, सद् आचार का किला बनाकर रहेगा तो ये डाकू तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।"

गोपीचन्द ने पूछा–"और दूसरी आज्ञा?"

माँ ने कहा–"यह कि यहाँ घर में तेरे लिए जिस तरह नाना प्रकार के भोजन तैयार होते थे और स्वाद से खाता था, उसी प्रकार जंगल में खाना।"

गोपीचन्द बोले–"परन्तु जंगल में ऐसा भोजन बनाएगा कौन?"

माँ ने कहा–"जब तू दिन–भर परिश्रम करेगा, योगाभ्यास करेगा, तब भूख खूब चमकेगी। जो रूखा–सूखा खाएगा, उसी में तुझे रसभरे पकवानों का स्वाद आएगा। स्वाद पकवानों में नहीं, भूख में है।"

गोपीचन्द ने कहा–"तीसरी आज्ञा?"

माँ ने कहा–"घर में तेरे पास कितने ही नौकर–चाकर थे। सुन्दर झूले में झूलता था। सेवक सेवा करते थे। दासियाँ गीत गाती थीं। उनकी मधुर ध्वनि से तू गहरी नींद में सो जाता था। उसी प्रकार वन में भी गहरी नींद सोना!"

गोपीचन्द बोले–"यह कैसे होगा?"

माँ ने कहा–"जब तेरे विचार अच्छे होंगे, जब योग के आसनों से तेरा शरीर थक जाएगा और ध्यान लगाकर मन थक जाएगा, तब गहरी निद्रा आएगी अवश्य। नींद नौकरों के कारण नहीं आती, थकावट के कारण आती है।"

ये तीन आज्ञाएँ गोपीचन्द की माता ने उसको दीं।

शेष पृष्ठ 06 पर

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

● भद्रसेन

भारत एक प्राचीन और विशाल देश है, अतः इसका इतिहास भी बहुत ही प्राचीन है। भारतीय इतिहास गगन में समय–समय पर अनेक ग्रह–उपग्रहों रूपी महापुरुषों ने अपनी विद्या, कला, साधना, प्रतिभा या श्रम द्वारा पूरे विश्व को आलोकित किया। भारतीय चरित नायकों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी का एक प्रतिष्ठित स्थान है। भारतीय साहित्य में यत्र–तत्र–सर्वत्र रामकथा की चर्चा बहुत श्रद्धा के साथ चित्रित हुई है। सभी भारतीय भाषाओं में अपनी–अपनी रामायण की गरिमा है और रामकथा से युक्त काव्य, नाटक, चम्पू साहित्य भी गद्य–पद्य में उपलब्ध होता है। भारतीय धर्म, संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से भी श्रीराम का एक आदर्श स्थान है। भारतीयता से सम्बद्ध जितने भी क्षेत्र एवं भारतीयों के जितने भी वर्ग हैं, उन सब में श्रीराम की एक सी प्रतिष्ठा है। वस्तुतः भारतीयता में श्री राम की स्थिति सूर्य सदृश है, सूर्य जहाँ अपनी उषा, ऊष्मा तथा ऊर्जा से सभी को लाभान्वित करता है, वहाँ अनेक ग्रह–उपग्रह उस की परिक्रमा करते हैं। ऐसे ही भारतीयता से सम्बद्ध सभी पहलू और सम्प्रदाय श्रीराम से आकर्षित हैं। इसका मूलभूत आधार श्रीराम का मर्यादा पुरुषोत्तम रूप है।

मर्यादा शब्द का अभिप्राय है, वह व्यवस्था, व्यवहार जिससे मानव समाज व्यवस्थित एवं सुखी हो। यह एक सब के अनुभव की बात है, कि जिस परिवार, संगठन के सदस्य आपस में सद्भाव, स्नेह, सत्य, सहयोग का व्यवहार करते हैं, वहीं सभी सुखी, समृद्ध तथा सुरक्षित रहते हैं। अतः मर्यादा का अर्थ है– मनुष्यों द्वारा पाली जाने वाली बातें। इस दृष्टि से श्रीराम का जीवन चरित एक आदर्श रूप है। पितृभक्ति, भ्रातृस्नेह, मैत्रीभाव, आदर्शराजा, तप, त्याग और संयम की तो श्रीराम एक साकार मूर्ति हैं।

एक युवराज होते हुए भी गुरुचरणों में शिष्यत्व को ग्रहण करना, पितृ आज्ञा के पालनार्थ वन–वन भटक कर हर तरह के कष्ट को सहना, एक पत्नीव्रत को पूर्णतया पालना, प्रजा के एक–एक दर्द में तड़पना आदि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की मर्यादा के ही तो अद्भुत रूप हैं।

इसीलिए ही आज भी जिस किसी रूप में श्रीराम की चर्चा सामने आती है, तो वह सभी को समान रूप से अपनी ओर आकर्षित करती है, क्योंकि श्रीराम का मर्यादा पुरुषोत्तम वाला रूप एक सजीव रूप है। अतएव वह सभी के दिलों की धड़कनों को अपनी ओर खींचता है तथा सभी में स्नेह, अपनत्व का संचार करता है।

श्रीराम अपने इन्हीं गुणों के कारण ही सभी भारतीयों में समान रूप से श्रद्धा के पात्र हैं। अतः आज भारतीयों की भावनात्मक एकता, अखण्डता और तज्जन्य देश की प्रगति, सुरक्षा और सुदृढ़ता के श्रीराम ही पहले सूत्र हैं। अतः संगठन के अभिलाषियों को इस केन्द्रबिन्दु की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। श्रीराम का यह गौरवमय रूप भारत के समीपवर्ती वर्मा, सुमात्रा, जावा, इण्डोनेशिया, बाली आदि देशों को भी प्रभावित करता है। तभी तो वहाँ के पुरातत्त्व, साहित्य, धर्मस्थल, लोकमंच श्रीराम से अभिभूत हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने एक पुत्र, शिष्य, भाई, मित्र, राजा, पिता के रूप में जो आदर्श उपस्थित किया है। उसी भावना को हर व्यक्ति अपने जीवन परिवार, समाज की समृद्धि, सुरक्षा तथा सम्मान के लिए चाहता है। जीवन के सर्वविध विकास के लिए ये भावनाएँ ही सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वजनिक सिद्धांत हैं। अतएव श्रीराम प्रतिज्ञा पालक मर्यादा संरक्षक, पतितपावन, सर्वसहयोगी के रूप में सभी के लिए स्मरणीय और अनुकरणीय हैं। तभी तो लाखों वर्ष बीत जाने पर भी हम सब के हृदयों में समाए हुए हैं।

182– शालीमार नगर,
होशियारपुर–146001

अनेक कदम अस्वच्छता की ओर

● दिलचस्प

स्वच्छ भारत की खातिर प्रधानमंत्री जी ने हाथ में झाड़ू थामी और दिल्ली की पॉश कॉलोनी में सफाई हेतु जुट गए। उनके पीछे सुरक्षा कर्मी, जी हुजूरिये और मीडिया की टीम चलने लगी। प्रतिदिन सफाई करने वाले सफाई कर्मियों की, अपवाद छोड़कर कभी अखबार में फोटो तक भी नहीं? बहुत खोजने पर हल मिला कि वे हमेशा साधारण पोशाक में गलियों, सड़कों नालियों की सफाई करते हैं मगर स्वच्छ भारत वाले टिपटॉप होकर साफ सड़क की सफाई को अंजाम देते हैं, तभी उनकी बम्पर पब्लिसिटी होती है? टी.वी. और रेडियो में दिन भर उनकी महानता के गुण गाए जाते हैं?

दिल्ली के मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री की झाड़ू हथिया ली और दिल्ली के तीन इलाकों को छोड़कर सारी दिल्ली की सफाई कर डाली। यह बात देश पर सत्ता करने वालों को नागवार गुजरी और झाड़ू वालों को वो झाड़ा लगाया कि मुख्यमंत्री होकर भी उनकी बात नहीं सुनी गई और झाड़ू वाले आधे से अधिक सफाई जनप्रतिनिधियों पर कोई न कोई जाँच बैठा दी गई?

स्वच्छता की खातिर हमारे प्रधानमंत्री जी ने 'नोटबंदी' की और पूरे देशवासियों को बैंकों और डाकघरों की लाइन में लगा दिया? इस स्वच्छता का कुछ और खुलासा कर दिया जाए। नोटबंदी पर पाँच सौ और दो हजार के नोटों में गांधी जी के प्रतीकात्मक चश्मे के दोनों शीशों पर स्वच्छ और भारत अंकित करवाया तथा इसके नीचे एक कदम स्वच्छता की ओर अंकित करवाया।

चश्मे की शीशों पर स्वच्छ और भारत अंकित करवाने से उनमें धुँधलापन आ गया और स्वच्छ अर्थात् साफ दिखने में दिक्कत आ गई? नोटों पर स्वच्छता के विज्ञापन से मुद्दा का मर्म ही समाप्त हो गया? घर में शौचालय बनाने को लेकर बच्चन जी और विद्या जी भले ही कितने ही एड (विज्ञापन) में नजर आए, मगर आज भी बहुतेरी आबादी खुले में शौच करने को मजबूर है? इस सच्चाई पर परदा नहीं डाला जाए? सक्षम व्यक्ति के रहने के लिए मकान भी होता है और जब मकान होता है तो उसमें शौचालय भी होता है। इस बाबत किसी को सलाह देना बेमानी है? यहाँ पहली आवश्यकता मजबूरों की मजबूरी समाप्त करना है।

सफाई तो दरकिनार, गलियों–सड़कों के गाय–गोधों से भी अभी तक 'निकाय' या सम्बन्धित संस्थाएँ आमजन को मुक्त नहीं करवा पाई हैं? आमजन भी दोषी हैं जो धर्मांधता के चलते एक निर्धारित स्थान पर इनको खाद्य सामग्री देने की बजाय घर से आगे या मनचाही जगह पर सेवा भाव या पशु–प्रेम प्रदर्शित करते हैं? ये कारक भी सफाई में बाधक हैं? 'स्वच्छ सर्वेक्षण–2017' में इन्दोर, भोपाल जैसे नगर छोड़कर देश में स्वच्छता के सारे दावे खोखले सिद्ध हुए हैं? 'स्वच्छता' विज्ञापनों और दिखावों से नहीं, अपितु धरातल पर स्वयं का मूल्यांकन करने पर हासिल होती है। आज हम देशवासियों में राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय भावना का अभाव है। इन अभावों को दूर किए बिना न तो देश तरक्की के सोपान पर जा सकता है और न ही आपस में भाईचारा और सद्भावना कायम हो सकती? मेरे अपने आदरणीय (अब दिवंगत) जामिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. श्याम स्वरूप शर्मा, जिन्होंने असंख्य बार विदेशों की सैर की, वे कहा करते थे कि विदेश की हवा में जाने क्या कशिश है कि वहाँ की धरा पर उतरते ही, सड़कों आदि पर थूकने तक की वर्जनाओं का निर्वहन होता है और दूसरी ओर भारतीय एयरोड्रम पर उतरते ही सफाई की समस्त प्रकार की वर्जनाएँ समाप्त हो जाती हैं क्योंकि हममें स्वच्छता और राष्ट्रीयता का अभाव जो है?

सुविधा प्रदान करने के पश्चात् सुविधा वापस लेना भी हमारे यहाँ अहम् का कारण बन जाता है? प्लास्टिक की थैलियों के प्रचलन के पश्चात् उन्हें प्रतिबंधित करना भी तो दुष्कर है? यह भी तो सफाई में बाधक है? अब तो दूध, दही, छाछ, लस्सी, जर्दे सुपारी की पुड़िया आदि छोटी–बड़ी थैलियों में ही बिकती हैं? आजकल तो चाय भी थैली में दी जाने लगी हैं? बच्चों की विभिन्न टॉफियाँ, किंडरजोय, फास्ट फूड–मेगी, चिप्स, कुरकुरे, बिस्किट, कुल्फी, कैंडी इत्यादि पैकटों में आ रही हैं? इन पर प्रतिबंध की बजाय इनके कचरे को नष्ट करना या कचरे का उपयोग करने की तकनीक का ईजाद किया जाए ताकि ये सब स्वच्छता में बाधक न बनें? यह लेखक तो वर्षों पूर्व, वर्षों तक दीपावली की कामना के पत्रों पर प्रिंटेड रूप में और रबर स्टाम्प के बतौर एक स्लोगन देता आया–

तनिक स्वच्छ नगर पालिका
अधिक स्वच्छ दीपमालिका।

चुरू, राजस्थान

ईश्वर सृष्टि की रचना मुख्यतः परोपकार के लिए करता है

● भावेश मेरजा

[भूमिका – गत सप्ताह आर्यसमाज–हितैषी एक प्रबुद्ध वैज्ञानिक ने एक बुजुर्ग से हुई अपनी बात के प्रसंग का उल्लेख कर ईश्वर सृष्टि क्यों उत्पन्न करता है, इस प्रश्न को प्रस्तुत करते हुए अपने विचार फेसबुक पर प्रकट किए। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में लिखे गए एतद् विषयक मन्तव्यों का भी उल्लेख किया। इस पर कुछ स्वाध्यायशील मित्रों ने अपनी टिप्पणियों के द्वारा अच्छा विमर्श किया जो पठनीय है और इस दार्शनिक विषय को समझने में सहायक भी हो सकता है। इसी प्रयोजन से इसे यहाँ प्रस्तुत किया जाता है– संकलनकर्ता]

बहुत पहले एक बुजुर्ग से हुआ वार्त्तालाप आज भी मेरे मन में उथल पुथल पैदा कर देता है। जब उन बुजुर्ग से पूछा गया कि यदि ईश्वर आपको अपनी इच्छा से अगला जन्म दे तो आप अगले जन्म में कौन बनना चाहेंगे?, तो उन बुजुर्ग ने उत्तर दिया कि यदि सच में ऐसा हो तो मैं चाहूँगा कि वो मुझे मिट्टी बना दे अर्थात् मुझे जड़ बना दे। मैं जीव को मिलने वाले सब कथित सुख छोड़ने को तैयार हूँ बस मुझे कभी भी ये सब दुःख ना भोगने पड़ें, इसकी गारण्टी दे दे भगवान मुझे जड़ बनाकर। यह सुनने पर तब मुझे सत्यार्थ प्रकाश का वह प्रश्नोत्तर याद आया था जिसमें ऐसी सोच को आलसी और दरिद्र लोगों की बात कहा गया है–

प्रश्नः जो न बनाता तो आनन्द में बना रहता और जीवों को भी सुख दुःख प्राप्त न होता।

उत्तरः यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं पुरुषार्थी की नहीं और प्रलय में क्या सुख वा दुःख है? जो सृष्टि के सुख–दुःख की तुलना की जाए तो सुख कई गुना अधिक होता है और बहुत से पवित्रात्मा जीव मुक्ति के साधन पर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं। प्रलय में निकम्मे जैसे सुषुप्ति में पड़े रहते हैं वैसे रहते हैं...। (सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास)

लेकिन मैं कई बार सोचता हूँ कि उस बुजुर्ग ने जीवन में बहुत संघर्ष किया था और अपने परिवार का भरण पोषण अपने पुरुषार्थ के बल पर अच्छे से ही किया था, इसलिए उसे कम से कम इस जीवन में तो आलसी या दरिद्र नहीं कहा जा सकता था फिर किस मनःस्थिति में उसने जड़ बनने की इच्छा पाली होगी? और यदि वह सोच से दरिद्र और आलसी था भी, तो भी क्या उसकी यह इच्छा पूरी नहीं होनी चाहिए? जब ईश्वर और जीव दोनों चेतन–स्वरूप हैं, स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है, तो फिर जीव प्रकृति या ईश्वर, दोनों में से किसी एक के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न हो ही, इसके लिए क्यों मजबूर है? ऐसे ही आशय के एक प्रश्न का उत्तर सत्यार्थ प्रकाश में यूँ दिया गया हैः

प्रश्नः जब ये जीव और प्रकृतिस्थ तत्त्व अनादि और ईश्वर के बनाए नहीं हैं तो ईश्वर का अधिकार भी इन पर न होना चाहिए क्योंकि सब स्वतंत्र हुए?

उत्तरः जैसे राजा और प्रजा समकाल में होते हैं और राजा के आधीन प्रजा होती है वैसे ही परमेश्वर के आधीन जीव और जड़ पदार्थ हैं। जब परमेश्वर सब सृष्टि का बनाने, जीवों के कर्मफलों के देने, सब का यथावत् रक्षक और अनन्त सामर्थ्य वाला है तो अल्प सामर्थ्य भी और जड़ पदार्थ उसके आधीन क्यों न हों? इसलिए जीव कर्म करने में स्वतंत्र परंतु कर्मों के फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतंत्र हैं। वैसे ही सर्वशक्तिमान, सृष्टि, संहार और पालन सब विश्व का कर्त्ता। (सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास)

इस प्रश्नोत्तर से मुझे यह ध्वनित होता है कि भले ही दोनों, जीव और ईश्वर, एक ही समय में विद्यमान हैं लेकिन उनमें इस लोक की तरह ही प्रजा और राजा का सम्बन्ध होना उचित और स्वीकार्य है। लेकिन मेरी शंका यह है कि प्रजा तो राजा को अपनी इच्छा से बनाती है या स्वीकार करती है, तो क्या जीवों ने भी ईश्वर को ऐसे ही अपनी इच्छा से स्वीकारा है या अपनी अल्प सामर्थ्य और ईश्वर की अनन्त सामर्थ्य के चलते ऐसा स्वीकारने की उन जीवों की मजबूरी है? क्योंकि ऐसे तो जीव केवल कर्मों के फल भोगने में ही परतन्त्र नजर नहीं आता बल्कि कर्म करने के लिए भी बाध्य नज़र आता है, क्योंकि वह ईश्वर की व्यवस्था का हिस्सा होने के लिए बाध्य या परतंत्र है।

आप स्वाध्याय और मननशील व्यक्तियों से प्रार्थना है कि मैं किस बिन्दु पर गलत ढंग से सोच रहा हूँ, बताने की कृपा करें। साथ ही, क्या जीव के जो इच्छा, राग, द्वेष आदि स्वाभाविक गुण हैं वे प्रलयावस्था में भी उसके साथ रहते हैं या नहीं?

टिप्पणीकर्ता 1 – ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों ही अनादि हैं। जब सृष्टि की उत्पत्ति होती है तो ईश्वर जीवों के उनके पिछले कर्मों के द्वारा उन्हें मनुष्यों या अन्य प्राणियों की श्रेणी में भेजता है। सभी मनुष्य सृष्टि की उत्पत्ति के समय युवावस्था में ही होते हैं, क्योंकि तभी आगे चलकर मैथुनी सृष्टि संभव होगी। अब यह समझना चाहिए कि अगर वे सभी युवा अपनी युवावस्था में है तो अवश्य ही उन्हें ईश्वर राजा के रूप में स्वीकार्य होगा ही, क्योंकि बिना ईश्वर के सृष्टि का अपने आप बनना संभव नहीं है। दूसरा, आपने जीवों के राग, द्वेष, इच्छा इत्यादि स्वाभाविक गुण लिखें हैं, वे प्रलय काल में जीवों के साथ ही सुषुप्त अवस्था में ही होंगे तभी तो जब प्रलय के पश्चात सृष्टि का आरंभ होता है तो जीवों को उनके पिछले कर्मों के द्वारा जन्म मिलता है।

मूल लेखक – धन्यवाद जी। प्रश्न यही है कि ईश्वर जीवों को जो विभिन्न श्रेणियों में या फिर मोक्ष में भी भेजता है, तो क्या उसमें जीवों की भी ऐसी इच्छा होती है या केवल ईश्वर की इच्छा के कारण होता है।

टिप्पणीकर्ता 1 – आपके अभी तक सभी कमेन्ट्स पढ़ने पर यह पता चलता है कि आप इस विषय को जानते हैं और आपको पर्याप्त ज्ञान भी है। मेरी समझ में – (1) ईश्वर के स्वाभाविक गुण (सृष्टि की रचना करने का सामर्थ्य और जीवों का कल्याण करना) के कारण ही वह सृष्टि की रचना करता है, ये दोनों ही गुण आत्माओं में नहीं हैं। (2) ईश्वर सर्वशक्तिमान होने से भी नियम से बंधा है। सृष्टि का उत्पन्न होना, फिर प्रलय आना, यह क्रम तो अनादि काल से ही है और इनका समय भी निश्चित है। ईश्वर कभी ऐसी इच्छा नहीं करेगा जो इन नियमों के विरुद्ध हो। कृपा अपने विचार भी लीजिए, आपके द्वारा इस विषय में और सीखने को ही मिलेगा।

मूल लेखक – जी, विषय का जानकार तो मैं बिल्कुल नहीं हूँ, हाँ जिज्ञासु बने रहने का प्रयत्न अवश्य करता हूँ। मेरी दृष्टि में आपके दोनों बिन्दु सही हैं, बस दूसरे बिंदू के संदर्भ में इतना और जोड़ना चाहूँगा कि जिस सृष्टि उत्पन्न करने व प्रलय करने को हम नियम कह रहे हैं, उसके पीछे जो सूक्ष्मतम नियम काम कर रहा हो वो हो सकता है यह हो कि सभी जीवों के प्रति सदैव दयालुता का स्वभाव रखता है और इसके चलते उनके कल्याणार्थ चाहे नियत अंतराल पर सृष्टि उत्पत्ति व प्रलय करनी हो या यदि सृष्टि की प्रासंगिकता न रहे (Just to consider a hypothetical situatiion) तो वो कुछ करना जिससे उनका इस स्थिति में कल्याण होता हो।

टिप्पणीकर्ता 2 – (1) ईश्वर भी चेतन को जड़ और जड़ को चेतन नहीं कर सकता है। (2) जीव और जड़ पदार्थ (प्रकृति) ईश्वर के आधीन अनादि काल से हैं– तीनों अनादि अनुत्पन्न नित्य होने से। पूर्व में किसी समय पर यह आधीनता स्वीकार की गई हुई नहीं है। (3) बुजुर्ग की समझ में अपने सांसारिक दुःखों की निवृत्ति का हल मिट्टी जैसे जड़ हो जाना आया होगा, इसलिए उन्होंने ऐसी इच्छा की और दुःख से अप्रीति – द्वेष जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं अतः सदैव रहते हैं, ऐसा मैं समझता हूँ।

मूल लेखक – धन्यवाद जी, आपकी बात को मैं सही समझता हूँ लेकिन मेरी जो समस्या है वह यह है कि मैं इस बात की संगति नहीं लगा पा रहा हूँ कि ईश्वर, प्रलयावस्था मे सुषुप्ति में पड़ी जीवात्माओं को जगाकर कर्म करने को क्यों बाध्य कर देता है? स्वयं ही से उनका राजा क्यों बन बैठता है? इस पर पुनः पुनः सोचने पर मैं जो संगति लगा पा रहा हूँ वह मैं नीचे लिख रहा हूँ, हालाँकि वह शास्त्रीय दृष्टि से सही है या नहीं, यह मुझे नहीं पता। कोई सैद्धांतिक या अन्य त्रुटि आप पाएँ तो अवश्य अवगत कराइएगा। प्रलयावस्था में सुषुप्ति की दशा में पड़ी आत्माओं को अपना या अपने स्वाभाविक गुणों का बोध नहीं था। फिर परमात्मा ने सृष्टि की उत्पत्ति हेतु महत्त्व बनाया। अभी तक भी उन आत्माओं को अपना बोध नहीं हुआ। ईश्वर की कृपा से ही आत्माओं को उनके अस्तित्व का बोध होता है ऐसा मुझे यः आत्मदा बलदा वाले मंत्र में प्रयुक्त 'आत्मदा' शब्द से लगता

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

हमारे नैतिक गुण

● गंगा प्रसाद उपाध्याय

ऋषि दयानन्द के तत्त्व–दर्शन के स्पष्टीकरण हेतु आचार–शास्त्र के मूल तत्त्वों के बाद उन नैतिक गुणों की चर्चा करना आवश्यक है जो उनके आचार शास्त्र में अनुस्यूत हैं। मनुष्य के नैतिक गुण मनुष्य की सभ्यता जितने प्राचीन हैं। ऋषि दयानन्द ने इनका आविष्कार नहीं किया। बस, इनका अर्थ एवं महत्त्व स्पष्ट किया है। उनका तप उस अज्ञान के बादलों को छाँटकर हटाने में निहित है जिनके पीछे वेद–ज्योति छिप गई थी। यह तप मानवता की लौकिक समृद्धि एवं पारलौकिक आनन्द की प्राप्ति हेतु आवश्यक था। इन दोनों तत्त्वों की प्राप्ति ही आचार–शास्त्र, नैतिकता एवं धर्म का उद्देश्य है।

वैशेषिक में धर्म

कणाद् ऋषि कहते हैं–

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।।

–वैशेषिक दर्शन : अध्याय–1, आह्निक–1, सूत्र–2

(जिससे अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति होती है, वह धर्म है।)

ऋषि दयानन्द उक्त सूत्र का अर्थ करते हुए कहते हैं–

यस्याचरणादम्युदयः सांसारिकमिष्टसुखं सम्यक् प्राप्तं भवति, येन च निःश्रेयसं पारमार्थिकं मोक्षसुखं च, स एव धर्मो विज्ञेयः। अतो विपरीतो ह्यधर्मश्च।

ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका : वेदोक्तधर्मविषयः

(जिसका आचरण करने से संसार में उत्तम सुख और निःश्रेयस अर्थात् मोक्षसुख की प्राप्ति होती है, उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत अधर्म होता है।)

यहाँ धर्म और नैतिकता के दो लक्षण बताए गए हैं– (1) यह सांसारिक समृद्धि की प्राप्ति कराने वाला हो; सांसारिक समृद्धि 'जीवन का साध्य नहीं है; इसकी प्राप्तिभर से जीवन पूर्ण नहीं होता; यह तो 'साधन' है। (2) मोक्ष की प्राप्ति 'जीवन का साध्य' है। कहना आवश्यक न होगा कि साध्य और साधन (या लक्ष्य और मार्ग) में अन्तर होता है। मार्ग लक्ष्य तक पहुँचने के लिए होता है। यदि मार्ग न होगा अथवा गलत या टूटा–फूटा मार्ग होगा तो वांछित यात्रा न हो पाएगी। वही मार्ग सही होगा जो हमें सुखपूर्वक लक्ष्य तक पहुँचा दे। यदि सड़क उत्तम कोटि की और सीमेन्ट से बनी हो किन्तु लक्ष्य की ओर न जाती हो तो वाञ्छित मार्ग नहीं है और उससे कोई बुद्धिमान् व्यक्ति न जाएगा।

इसी प्रकार सांसारिक समृद्धि आवश्यक तो है किन्तु उसी सीमा तक जहाँ तक यह लक्ष्य–प्राप्ति में सहायक रहे। इस कारण ऋषि दयानन्द आचार–शास्त्र के सांसारिक मूल्य की उपेक्षा नहीं करते। उनका तत्त्व–दर्शन विषयासक्तिवाद के विरुद्ध अवश्य है, किन्तु संसारत्यागवाद नहीं है। यह समृद्ध जीवन की अनुमति देता है, बस, मनुष्य साध्य को अनदेखा न करे। धर्म का 'निःश्रेयस' भाग मरणोपरान्त प्राप्त होने वाला आनन्द प्राप्त नहीं है। यह तो जीवनकाल में ही भौतिक–सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति से भिन्न अर्जित होने वाला आन्तरिक–आध्यात्मिक उत्थान है। जीवन की शिक्षा यह है कि उथली वस्तुएँ निःशेष हो जाती हैं। गम्भीर वस्तुएँ बनी रहती हैं और मनुष्य का भविष्य निर्धारित करती हैं।

धर्म के चार लक्षण

धर्म के चार लक्षण समझाते हुए ऋषि दयानन्द 'सत्यार्थ प्रकाश' (समुल्लास–7, प्रस्तर–53) में कहते हैं–

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

–मनुस्मृति : अध्याय–2, श्लोक –12

वेद, स्मृति (वेदानुकूल आप्तोक्त मनुस्मृत्यादि शास्त्र) सत्पुरुषों का आचार, जो सनातन अर्थात् वेद द्वारा परमेश्वर प्रतिपादित कर्म और अपने आत्मा में प्रिय अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है, जैसा कि सत्यभाषण, ये चार धर्म के लक्षण हैं, अर्थात् इन्हीं से धर्माधर्म का निश्चय होता है। जो पक्षपात–रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है, उसी का नाम धर्म; इससे विपरीत जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण, सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरूप कर्म है, उसी को अधर्म कहते हैं।

धर्म के चार लक्षणों में पहला है 'वेद'। वेदों में सार्वभौम सिद्धान्तों का ज्ञान है। परन्तु साधारण मनुष्यों के लिए पूर्णतः निश्चित करना कठिन होता है कि किसी परिस्थिति में क्या धर्म है और क्या नहीं। इससे सरल बनाने के लिए ऋषि मुनियों ने समय–समय पर ग्रन्थ लिखकर वैदिक सिद्धांतों को स्पष्ट किया है और मनुष्य के कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य को विस्तार से समझाया है। ये ग्रन्थ 'स्मृति' कहलाते हैं। इनमें मनुस्मृति के प्रक्षिप्त भाग को छोड़कर जो शोधपूर्वक हटाने योग्य है मूल भाग के प्रति ऋषि दयानन्द अपूर्व सम्मान प्रकट करते हैं। जन–सामान्य के मार्गदर्शन के लिए केवल सिद्धांत एवं नियम अपर्याप्त होते हैं और उसे प्रमाण के साथ दृष्टान्त की अपेक्षा होती है, अतः उसके लिए तीसरा लक्षण है 'सदाचार' अर्थात् महान् व्यक्तियों के जीवन–चरित। किसी सिद्धांत में छिपा हुआ सत्य जब जीवन में उतरा हुआ दिखता है, तब अधिक स्पष्टता में समझ में आता है। चौथा एवम् अन्तिम लक्षण है 'आत्मा की साक्षी' अर्थात् वह करना जो पवित्र अवस्था में अपने आत्मा को प्रिय हो।

आत्मा की साक्षी

ऋषि दयानन्द आत्मा की साक्षी को अतिशय महत्त्व देते हैं और इसे परमात्मा की शिक्षा बताते हैं। वे इसका महत्त्व बताते हुए 'सत्यार्थ प्रकाश' 'समुल्लास–7, प्रस्तर–10) में कहते हैं–

"और जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता या चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की 'इच्छा', ज्ञानादि' उसी इच्छित विषय पर झुक जाते हैं। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में शंका और लज्जा तथा अच्छे कर्मों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।"

मनु–प्रोक्त नैतिक गुण

मनुस्मृति (अध्याय–6, श्लोक–92) में दस नैतिक गुणों का उपदेश किया गया है। ऋषि दयानन्द इनमें 'अहिंसा' और मिलाकर कुल 11 गुणों का उल्लेख 'संस्कार विधिः' (गृहाश्रमप्रकरणम्) में निम्नवत् करते हैं–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

अर्थ– ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी आदि सब मनुष्य को योग्य है कि निम्नलिखित धर्म का सेवन और उससे विरुद्ध अधर्म का त्याग प्रयत्न से किया करें।

धर्म नाम न्याय– 'पक्षपात छोड़कर सत्य का ही आचरण' और असत्य का सर्वदा परित्याग रखना। इस धर्म के ग्यारह लक्षण हैं– **(अहिंसा)** किसी से वैर–बुद्धि करके उसके अनिष्ट करने में कभी न वर्त्तना। **(धृतिः)** सुख–दुःख, हानि–लाभ में भी व्याकुल होकर धर्म को न छोडना, किन्तु धैर्य से धर्म ही में स्थिर रहना। **(क्षमा)** निंदा–स्तुति, मानापमान का सहन करके धर्म ही करना। **(दमः)** मन को अधर्म से सदा हटाकर धर्म में प्रवृत रखना। **(अस्तेयम्)** मन–कर्म–वचन से अन्याय और अधर्म से पराये द्रव्य को स्वीकार न करना। **(शौचम्)** राग–द्वेषादि के त्याग से आत्मा और मन को पवित्र और जलादि से शरीर को शुद्ध रखना। **(इन्द्रियनिग्रहः)** श्रोत्रादि ब्राह्य इन्द्रियों को अधर्म से हटाके धर्म में ही चलाना। **(धीः)** वेदादि सत्यविद्या, ब्रह्मचर्य एवं सत्संग करके और कुसंग, दुर्व्यसन, मद्यपानादि का त्याग करके बुद्धि को सदा आगे बढ़ाते रहना। **(विद्या)** जिससे भूमि से लेके परमेश्वरपर्यन्त का यथार्थ बोध होता है, उस विद्या को प्राप्त होना। **(सत्यम्)** सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना। **(अक्रोधः)** क्रोधादि दोषों को छोड़कर शान्त्यादि गुणों का ग्रहण करना कहाता है, इसका ग्रहण करना चाहिए।

अन्याय=पक्षपात सहित आचरण अधर्म है, जो कि हिंसा=वैर–बुद्धि, अधैर्य, असहन, मन को अधर्म में चलाना, चोरी करना, अपवित्र रहना, इन्द्रियों को न जीतकर अधर्म में चलाना, कुसंग, दुर्व्यसन, मद्यपानादि से बुद्धि का नाश करना, अविद्या जो कि अधर्माचरण, अज्ञान है उसमें फँसना, असत्य मानना, असत्य बोलना, क्रोधादि दोषों में फँसकर अधर्मी, दुष्टाचारी होना, ये ग्यारह अधर्म के लक्षण हैं। इनसे सदा दूर रहना चाहिए।

शतपथ–प्रोक्त दस गुण

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में उपदिष्ट 10 नैतिक गुणों का उल्लेख ऋषि दयानन्द 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' (वेदोक्तधर्मविषयः) में निम्नवत् करते हैं–

कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा धृतिरधृतिर्हीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एव तस्मादपि पृष्ठत उपस्पृष्टो मनसा विजानाति।।

(काण्ड–14, अध्याय–4)

(कामः) प्रथम विचार ही करके सब उत्तम व्यवहारों का आचरण करना और बुरों को छोड़ देना, इसका नाम काम है। (संकल्पः) जो सुख और विद्यादि शुभगुणों को प्राप्त होने के लिए प्रयत्न से अत्यन्त पुरुषार्थ करने की इच्छा है, उसको संकल्प कहते हैं। (विचिकित्सा) जो–जो काम करना हो उस को प्रथम शंका कर–कर के ठीक निश्चय करने के लिए जो सन्देह करना है उसका नाम विचिकित्सा है। (श्रद्धा) जो ईश्वर और सत्यधर्म आदि शुभ गुणों में निश्चय से विश्वास को स्थिर रखना है, उसको श्रद्धा जानना। (अश्रद्धा) अर्थात् अविद्या, कुतर्क, बुरे काम करने, ईश्वर को नहीं मानने और अन्याय आदि सब गुणों से सब प्रकार से अलग रहने का नाम अश्रद्धा समझना चाहिए। (धृतिः) जो सुख, दुःख, हानि, लाभ आदि के हाने से भी अपने धीरज को नहीं छोड़ना, उसका नाम धृति है। (अधृतिः) बुरे कामों में दृढ़ न होने को अधृति कहते हैं। (ह्री) अर्थात् जो झूठे आचरण करने और सच्चे कामों को नहीं करने में मन को लज्जित करना है, उसको ह्री कहते हैं। (धीः) जो श्रेष्ठ गुणों को शीघ्र धारण करने वाली वृत्ति है, उसको धी कहते हैं। (धीः) जो ईश्वर की आज्ञा अर्थात् सत्याचारण धर्म करना और उससे उलटे कामों को सब प्रकार से देखता है, ऐसा जानकर उससे सदा डरना कि जो मैं पाप करूँगा तो ईश्वर मुझ पर अप्रसन्न होगा, इत्यादि गुण वाली वस्तु का नाम 'मन' है। इसको सब प्रकार से सबके सुख के लिए युक्त करो।

नैतिक गुणों के विषय में दो परस्पर विरुद्ध बातें कहीं भी सुनने में आ जाती हैं, जो निम्नलिखित हैं–

1. संसार में सबसे अधिक बदलने वाली दो वस्तुएँ हैं न्यायशास्त्र और आचार–व्यवहार। ये तथा अन्य अनेक नैतिक गुण युग और स्थान बदलते ही बदल जाते हैं।

2. नैतिक गुणों और आचार–शास्त्र की मान्यताओं में आते हुए परिवर्तनों के पीछे भी कुछ मानवीय गुण ऐसे स्थायी हैं जो न केवल मनुष्यों द्वारा सर्वत्र सर्वदा सराहे जाते हैं, अपितु बाह्यतः परिवर्तनशील लगते हुए भी अपने स्वरूप में 'नित्य' हैं।

ऋषि दयानन्द का तत्त्व दर्शन से साभार

बोधरात्रि का आध्यात्मिक विज्ञान

● डॉ. रामप्रकाश शर्मा "सरस"

अनेक सामान्य सी घटनाओं ने प्रसुप्त दिव्य चेतना को झंकृत एवं जागृत कर विश्व में अनेक विलक्षण प्रतिभाओं को जन्म दिया है। विश्व के अनेक देशों में महान विभूतियों का जन्म हुआ। कवि, लेखक, विद्वान, वैज्ञानिक, विचारक, सुधारक, योगी, चित्रकार, कलाकार, संगीतकार इत्यादि सभी कम–अधिक एक श्रेणी की प्रतिभाएँ हैं। इनमें सभी जन्मना प्रतिभा सम्पन्न नहीं हुई, इनका जीवन वृत्त इसका प्रमाण है। अधिकांश के जीवन में किसी न किसी घटना का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह घटनाएँ स्वतः घटित नहीं होती है। अपितु चर्म चक्षुओं से अगोचर परोचतना की अवाक् प्रेरणा से ही यह सामान्य घटनाएँ, असामान्य घटनाएँ बनकर विश्व इतिहास के परिवर्तन का कारण बन जाती हैं। बालक मूलशंकर के जीवन की जो विलक्षण घटना शिवरात्रि व्रत की, पढ़ने को मिलती है। वह मूलशंकर के आराध्य की अदृश्य अहेतुकी कृपा का ही परिणाम है।

मानव हृदय को परिवर्तित कर देने वाली घटना, ईश्वरीय शक्ति का आभास दिलाती है। ईश्वर को जिस दिव्य आत्मा के माध्यम से जगत् का कल्याण कराना अभीष्ट होता है उसके जीवन में कोई एक सामान्य घटना असामान्य बन जाती है। मूलशंकर के साथ घटी ऐसी अनगिनत घटनाएँ करोड़ों लोगों के जीवन के साथ घट चुकी हैं घट रही हैं, इससे भी अधिक झकझोर देने वाली परिस्थितियों को देखने और उनसे गुजरने का अवसर न जाने कितने लोगों का मिला होगा। किन्तु कोई दूसरा दयानन्द न बन सका। बालक नरेन्द्र गुरु रामकृष्ण परमहंस के स्पर्श मात्र से विशेष अनुभूति को प्राप्त कर दिव्यमार्ग के प्रणेता बने। भारतीय संस्कृति के संदेश का पश्चिमी देशों में बिगुल बजाने वाले स्वामी विवेकानन्द भी एक सामान्य घटना से अद्वितीय परिवर्तन को प्राप्त हुए। महात्मा बुद्ध को बुद्धत्व, वीणा की सामान्य घटना से प्राप्त हुआ। न्यूटन के जीवन में फल गिरने की घटना महत्त्वपूर्ण रही, स्वाति मुनि के जीवन में झरने की बूँदें सूखे पत्ते पर गिरने की घटना नवीन बोध–खोज का कारण बनी। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. सी.वी. रामन् प्रथम विदेश यात्रा पर 1921 में समुद्री जहाज से लन्दन गए, जहाज के ऊपर डेक पर बैठे–बैठे भूमध्य सागर के नीचे जल में पड़ने वाली तरंगों से रामन् की वैज्ञानिक जिज्ञासा जागृत हुई और विज्ञान के सूक्ष्म तल में उतरने का बोध प्रकट हुआ। महान वैज्ञानिक होमी भाभा प्रकृति से कला प्रेमी, एक सामान्य घटनावश वैज्ञानिक नभमंडल के उज्ज्वल नक्षत्र बने।

सृजनात्मक चेतना का विकास हो या विध्वंसात्मक प्रवृति का, दोनों के मूल कारण में उनकी सूक्ष्म चेतना में सात्त्विक या तामसिक ऊर्जा प्रधान होती है। हिटलर, मुसोलिनी, सिकन्दर सद्दाम इत्यादि की प्रवृत्तियाँ भी किसी एक परिस्थिति में उत्पन्न कारण की परिणति हैं। नानक, बुद्ध, विवेकानन्द, अरविन्द, सुभाष, भगतसिंह यह सभी जिस स्तर पर पहुँचे, उसके कारण में उनकी अन्तः उज्ज्वल चेतना है। यह सभी और इन जैसे और भी, किसी न किसी घटना की देन हैं।

बालक मूलशंकर दैवीय सात्त्विक ऊर्जा से ओत–प्रोत था। जिसके परिणाम स्वरूप नास्तिकता को उत्पन्न करने वाली परिस्थिति, अगाध आस्तिकता का उदाहरण बनी। चूहे की घटना का वह कौतूहल पूर्ण क्षण ही क्रान्ति का अप्रत्याशित कारण बन गया। भारत के भाग्योदय की परम कल्याणकारिणी वह शिवरात्रि, बोध रात्रि कहलाई। भारत भाग्य का सूर्य गुजरात में उदय हुआ जिसने विश्व भर के बुद्धिजीवियों का ध्यान भारत की ओर आकृष्ट करने की स्थिति उत्पन्न की। भारत के प्रति न केवल भारतीयों का अपितु विश्व मानव जाति का विशेष आकर्षण यहाँ की संस्कृति रही है।

भारत की संस्कृति में समय–समय पर नव स्फूर्ति का शक्ति–संचार करने वाले अनेक दिव्य पुरुष विश्व आभामण्डल को प्रकाशावृत्त से आच्छादित करते रहे हैं। इन महापुरुषों का सम्बन्ध किस देश, जाति, भाषा, रूप, रंग से था यह कभी महत्त्वपूर्ण नहीं रहा, महत्त्वपूर्ण यह रहा, कि उनकी नव दृष्टि से मानव जाति में कौन सी नई शक्ति, नई विचार धारा उत्पन्न हुई। जीवन काल कितना छोटा या बड़ा रहा यह भी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि प्रेरणा से लाखों–करोड़ों दीप जलाने वाली, यह महाज्योति कितने गहनतमावृत मन–मानसों में आलोक की पावन आभा फैलाने में सक्षम हुई, महत्त्व इस उपलब्धि का है।

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र अनेक बार आद्योपान्त पढ़ने के पश्चात् यह कह सकता हूँ कि उनके जीवन की ऐसा कोई घटना मेरी स्मृति में नहीं है जिसे उनके लक्ष्य के अनुकूल माना जा सके। मूल शंकर के जीवन की प्रभात बेला (बोधरात्रि) से ज्योतिलय (निर्वाण दिवस) तक की जीवन यात्रा में एक के बाद एक पीड़ा–भय से रोमांचित कर देने वाली घटनाएँ ऐतिहासिक हैं। इतने अल्प समय में, इतनी विकट परिस्थितियों में अनेक असाधारण कार्य जो महर्षि दयानन्द ने पल–पल की प्रतिकूलताओं में किए, वह सभी मर्मस्पर्शी प्रेरक प्रसंग हैं।

विश्व के उन सभी समकालीन महान पुरुषों ने हृदय से कृतज्ञता पूर्वक महर्षि के मानवतापरक विभिन्न कार्यों की सराहना की है। जो कोई भी निष्पक्ष एवं चिन्तनशील हैं वे महर्षि दयानन्द के उपकारों के प्रति ऋणी हैं। युग पुरुष त्याग, ज्ञान, बल के आधार पर इतिहास का अंग बनते हैं। शताब्दियाँ उनके नाम से जानी जाती है 19वीं शताब्दी महर्षि दयानन्द, वैदिक संस्कृति की पुनः स्थापना, सामाजिक जीवनोत्थान की अभूतपूर्व क्रान्ति, स्वतन्त्रता आन्दोलन का शंख नाद करने के लिए जानी जाती है। स्वामी दयानन्द ने विश्व सभ्यता एवं संस्कृति के आदि प्राणस्रोत वेद के माध्यम से मानव में अन्तर्निहित प्रतिभा को जागृत करने के उद्देश्य से वैदिकीय जीवन व्यवस्था पुनः स्थापित की। वेदों की वैज्ञानिकता अपनी अप्रतिम योग–ज्ञान शक्ति के बल पर विश्व मनीषियों के समक्ष प्रस्तुत की। वेदों के अध्ययन, अनुसंधान की चुनौती पूर्ण प्रेरणा दी। भारत के पुरातन गौरव को विश्व के बुद्धिजीवियों के विवेक में प्रविष्ट कराया। अज्ञानतावश या दम्भवश अथवा सोद्देश्य जो भारत को हीन कहने – स्थापित कराने में प्रयत्नशील थे, उनके वह समस्त दुष्प्रयास असफल हुए। प्राचीन वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति का शुभारम्भ गुरुकुलों की स्थापना कर प्रारम्भ किया। यज्ञ एवं संध्या की वैज्ञानिक आध्यात्मिक पद्धति प्रस्तुत कर नाना प्रकार की अनर्गल पूजा पद्धतियों एवं तथाकथित उपासनाओं के भ्रमजाल को तोड़ा। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद सम्मत उपासना करने का आदेश दिया। ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्ता इत्यादि वैदिक विशेषण ईश्वर के लिए दिए हैं और बलपूर्वक इसी सृष्टिकर्ता की उपासना करनी चाहिए ऐसा जगत कल्याण हित मन्तव्य दिया। महर्षि ने भारत के गौरवपूर्ण अतीत को पुनः स्थापित करने के लिए ऋषि ग्रंथों को पढ़ने का संदेश जन–जन को दिया।

शिक्षा, विज्ञान, कला, विविध वैज्ञानिक खोजों, कृषि, व्यापार, राज–काज व्यवस्था इत्यादि का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा, जिस पर उन्होंने अपनी स्वर्णिम अश्म लेखनी नहीं चलाई।

भारत के उज्ज्वल इतिहास का स्वाभिमान हिमालय के उच्च शिखर पर स्थापित करने के उद्देश्य से वेदों की शिक्षा पर सर्वाधिक बल दिया। शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों का बहिष्कार, सज्जनों का सत्कार, ऋषि ग्रन्थों का पुनः उद्धार, गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का प्रसार इत्यादि अनेक ऐतिहासिक क्रान्तदर्शी कार्य किए।

स्वामी दयानन्द का व्यक्तिगत चरित्र, सामाजिक चरित्र, राष्ट्रीय चरित्र विश्व भर के महान पुरुषों में अद्वितीय है।

महर्षि के जीवन का प्रत्येक श्वास प्राणीमात्र के हितार्थ समर्पित था। उनकी बोधरात्रि भारत ही नहीं, विश्व कल्याण की सौभाग्यमयी सुप्रभात थी। उन्होंने अपने बोधामृत का पान सभी को कराया। विष के घूँट अनेक बार पी–पी कर करोड़ों को झकझोर कर जगाया और बोधपूर्ण जीवन जीने की दिशा प्रदान की।

बी–208, ग्रीन व्यू हाईट्स अपार्टमेन्ट,
राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद (उ.प्र.)
मो. 9810796203

☞ *पृष्ठ 02 का शेष*

बोध कथाएँ...

मैं एक संन्यासी हूँ। आज्ञा तो नहीं दे सकता, चेतावनी दे सकता हूँ अवश्य कि यदि प्रभु–दर्शन करना है, यदि शान्ति की इच्छा है और परम आनन्द की अभिलाषा है, तो मन को इस माया में फँसने नहीं देना!

जैसा दृष्टिकोण, वैसा अन्तःकरण

वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देखकर सोचा–'कितना सुन्दर स्थान है यह! यहाँ बैठकर ईश्वर का ध्यान करूँगा।'

एक चोर ने उसे देखा तो सोचा–'वाह! यह तो सुन्दर स्थान है! चोरी का माल लाकर यहाँ रखा करूँगा।'

एक दुराचारी ने देखा तो सोचा–'यह तो अत्यन्त एकान्त स्थान है! दुराचार करने के लिए इससे उत्तम स्थान और कहाँ मिलेगा?"

एक जुआरी ने देखकर सोचा–'अपने साथियों को यहाँ लाऊँगा, यहाँ बैठकर हम जुआ खेलेंगे।'

अलग–अलग दृष्टिकोण होने के कारण एक ही मकान को प्रत्येक व्यक्ति ने अलग–अलग रूप में देखा। जैसा दृष्टिकोण बनाओगे, वैसा अन्तःकरण बनेगा अवश्य। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा अन्तःकरण अच्छा हो तो दृष्टिकोण अच्छा बनाओ।

सब जग ईश्वर रूप है, भला बुरा नहिं कोय।
जैसी जाकी भावना, तैसा ही फल होय।।

लोभ सरिस अवगुन नहीं

एक व्यक्ति था। उसके पास एक मुर्गी थी। प्रतिदिन सोने का एक अण्डा देती थी। उसे बेचकर वह अपना जीवन–निर्वाह करता था। एक दिन उसने सोचा–'मुर्गी प्रतिदिन एक ही अंडा देती है। इसे मारकर सारे अण्डे क्यों न निकाल लूँ।'

मार डाला उसने। एक भी अण्डा नहीं मिला। पहले जो एक अंडा प्रतिदिन मिलता था, वह भी समाप्त हो गया। इसीलिए शास्त्रों ने कहा–'लोभ मत करो!' लोभ से विनाश होता है। लोभ को हमारे ऋषियों ने पाप का बाप कहा है। प्रत्येक पाप का जन्म इसी से होता है।

क्रमशः

आर्य – द्रविड़ विभाजन के भ्रम निवारण

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. लालजी सिंह के शोध के आधार पर

● हरिकृष्ण निगम

जब से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. लालजी सिंह ने अपने तीन वर्षीय शोध के आधार पर जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर सेलुलर मॉलीक्यूलर बायलोजी के क्षेत्र में कई देश के वैज्ञानिकों की देख रेख में सम्पन्न की गई थी उन इतिहासकारों के विकृत सेकुलरवादी दृष्टिकोण का पर्दाफाश किया है। जो कहते रहे हैं कि आर्य भारत के बाहर से आए थे या द्रविड़ों को उन्होंने सिंधु घाटी से विन्ध्य के नीचे खदेड़ दिया था। इस देश के आर्य मूल निवासी नहीं थे, वे द्रविड़ मूल के लोगों को आक्रमण द्वारा विस्थापित करने के साथ आर्य–द्रविड़ वर्गीकरण की पुष्टि के साथ बौद्धिक विघटन का बीजारोपण करने में सफल हुए थे। पर जिस दिन से एक विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय मानव आनुवांशिक पत्रिका में जिसका नाम हैं ''अमेरिकन जर्नल ऑफ ह्यूमेन जेनेटिक्स'' में डॉ. लालजी सिंह के शोध परिणाम प्रकाशित हुए हैं, देश के पुरातन अध्याय में सेकुलरवादी दृष्टिकोण की शव परीक्षा करना एक बड़े स्तर पर हो चुकी है।

सर्वप्रथम 18 वीं और 19 वीं शताब्दी मे अनेक ब्रिटिश नृवंशशास्त्रियों, पुरातत्वविदों एवं भाषा शास्त्रियों ने यह सिद्ध करने की कोशिश की थी कि हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की सिंधु घाटी की सभ्यता के मूल वासी द्रविड़ थे जो श्याम वर्ण के थे और ई. पूर्व 1500 आर्यो ने उन्हें पश्चिमी रूस या मध्य एशिया से आक्रमण कर पराजित किया था। वे यह भी कहते थे कि हिन्दू धर्म दजला व फरात नदियों के मुहाने पर मेसोपोटामिया में जन्मा, जो इराक में है और एक आयातित धर्म हैं जो मूल रूप से विभिन्न नस्ल द्वारा, आर्य कहलाने वाले लोगों द्वारा उत्तरापथ में व्यवहृत किया गया। वस्तुतः आर्य द्रविड़ दन्तकथा सबसे पहले डी.एन.ए. पर मैसाचुसेट्स के डॉ.सी. पंसे की शोध द्वारा छिन्न भिन्न की गई जो उन्होंने भारतीयों व यूरोपियनों की नस्लों पर की थी। यह 6 अक्टूबर 2005 की बात है जब बी.बी.सी. पर एक कार्यक्रम में खुलासा किया गया था कि आर्य–द्रविड़ का जातीय विचार किसी भी तरह स्वीकार्य नहीं है और स्पष्ट रूप से विकृत साम्राज्यवादी दृष्टि की उपज रही है। भारत के वैदिक व औपनिषदिक युग तथा हिन्दू धरोहर को यह अपमानित करने की साजिश प्रतीत होती है।

कुछ भी हो प्रो. लाल जी सिंह का शोध कार्य देश के पुरातन इतिवृत्त का एक ऐसा अध्याय है जो वैज्ञानिक अध्ययन में किसी राजनीति बाज के लिए नकाराना स्पष्टकारणों से संभव नहीं है।

यह वैज्ञानिक अध्ययन इस भ्रामक तर्क को कदाचित सदा के लिए कटघरों में खड़ा कर देगा कि दक्षिण भारतीय द्रविड़ मूल के हैं और उत्तर भारतीय आर्य थे जिन्होंने उन्हें उत्तरी क्षेत्र से सुनियोजित रूप से आक्रमण द्वारा अपदस्थ कर दक्षिण की ओर पलायन करने के लिए बाध्य किया था। हाल के इस अध्ययन की विश्वसनीयता इसलिए भी स्पष्ट हैं क्योंकि डॉ. सिंह स्वयं एक विख्यात मौलिक्यूलर जीव विज्ञानी के रूप में हैदराबाद स्थित सेलुलर और मौलिक्यूलर बाइलाजी सेन्टर के पूर्व निदेशक रहे हैं। उनकी टीम के दूसरे विदेशी सदस्यों ने भी अपने अध्ययन में वैज्ञानिक रूप से यह निष्कर्ष निकाला था कि समस्त भारतवासियों का सामान्य आनुवांशिक तत्व व मूल एक ही है। दूसरे शब्दों में इस देश के सभी लोगों के डी.एन.ए. का ढाँचा समान है। गत 60,000 वर्षों से भारतीयों की मुख्य धारा में कोई विदेशी 'जीन' या डी.एन.ए. प्रवेश नहीं कर सका है। एस्टोनिया बायो सेन्टर के वैज्ञानिक डॉ. ज्ञानेश्वर चौबे ने वैसे सन 2009 में ही अपना शोध पत्र प्रकाशित किया था कि आर्यों के बाहर से आगमन और आक्रमण की अवधारणा जो भारत के इतिहासकार आज भी अंग्रेजों के कुटिल प्रच्छन्न के कारण प्रच्छन्न एजेन्डा के कारण पढ़ाते रहे सर्वथा अवैज्ञानिक है। यहाँ तक कि तामिलनाडु के कथित द्रविड़ और आर्यों में कोई अन्तर नहीं है और उनके अन्तर्सम्बन्ध रहे हैं। आर्यों के बाहर से इस देश में आने के स्थान पर सच तो यह है कि वे इस उपमहाद्वीप से योरोप और युरेशिया क्षेत्र में गए थे। प्राचीन भारतीय वैदिक साहित्य और पुरातन महाकाव्यों और आख्यानों में एक भी सन्दर्भ आज तक नहीं पाया गया है कि आर्यों ने बाहर से आकर द्रविड़ों से संघर्षकर उन्हें पलायन के लिए बाध्य किया। प्राचीन काल से इस देश की बहुआयामी संस्कृति के प्रभाव क्षेत्र का विस्तार इस प्रकार हुआ था कि अनेक दूर–सुदूर के देशों में भी एक बेहतर समावेशवादी भारत की छाया आज भी देखी जा सकती है। संस्कृत साहित्य में आर्य द्रविड़ जैसे जाति सूचक शब्द नहीं है। आर्य का अर्थ था सम्माननीय या श्रेष्ठ। आर्य द्रविड़ परिकल्पना की प्रो. सी. पाण्डेय (न्यूटन, येसायुसेंट्स), डॉ. एन. ए. परीक्षण की धज्जियाँ उड़ चुकी हैं। 4 वर्ष तक 12000 नमूनों के आधार पर आर्य आक्रमण का सिद्धान्त खण्डित किया गया।

आर्यों की भारत में कहीं बाहर से आकर बसने की बात सर्वप्रथम सन् 1848 में फेडरिख मैक्समूलर ने कही थी। प्रसिद्ध भारतवेत्ता और वैदिक वाङ्मय के अध्येता सरक्षण का मन्तव्य आज उन अभिलेखों द्वारा सिद्ध हो चुका है, जहाँ उसे भारतीयों का मनोबल गिराकर अंग्रेजी चर्चों का धर्मान्तरण का कार्य प्रशस्त करने का दायित्व दिया गया था। चाटुकारिता की मनोवृत्तिवालों भारतीय इतिहासकारों ने भी तब से इस बात को बिना सोच विचारे स्वीकार किया और इस असत्य का स्वयं प्रचार करने में लग गए। यदि आर्यों के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद संसार का सबसे पुराना ग्रंथ और संस्कृत सबसे पुरानी समृद्ध, वैज्ञानिक भाषा, क्या किसी ने उसमें कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संकेत भी देखा है कि उनके रचयिता भारत के बाहर से आए थे? इस देश का नाम आर्यावर्त था ऐसा बहुत से ग्रन्थों में वर्णित है। आर्यावर्त के पूर्व इस देश या भूखण्ड का क्या नाम था, इसका कोई उत्तर नहीं है। अतः यह अकाट्य है कि इस देश में आर्यों से पहले कोई और न था और न ही इस देश का कोई नाम था।

सम्भवतः हिन्दुओं में फूट पैदा करने के लिए उपनिवेशवादी अंग्रेजों ने द्रविड़ों को आर्यों से भिन्न बताया था जब कि वास्तविकता यह है कि द्रविड़ शब्द आर्य ब्राह्मणों के दस कुलों में से पाँच कुलों में होता है जिसमें आदिगुरु शंकराचार्य जैसे ब्राह्मण पैदा हुए थे।

पिछली पीढ़ी के पत्रकार यदि अतीत के पृष्ठ पलटें तो उन्हें याद आएगा कि अक्टूबर 1977 में सोवियत संघ में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में अनेक भाषाविद, पुरातत्ववेत्ता और इतिहासविद सम्मिलित हुए थे। भारतीय प्रतिनिधि मंडल के अलावा ईरान, अफगानिस्तान, मध्य एशिया और योरोप के अनेक भारतवेत्ता या 'इन्डोलाजिस्ट' भी शामिल थे। उन्होंने लगभग एक मत से आर्यों के ईरान, सोवियत संघ या मध्य एशिया आदि से जाकर भारत में बसने की बात का खण्डन किया था। सोवियत तजाकिस्तान के दुशाम्बे नगर में आयोजित इस सम्मेलन में कुछ रोचक बातें सामने आई थीं। ईरान के शाह ''आर्य मिहिर'' की पदवी धारण करने में गर्व क्यों करते थे? किसी भी रूसी भाषा के मानक शब्द कोश में लगभग हर पृष्ठ पर पाँच से दस शब्द स्पष्ट रूप से संस्कृत के मूल उच्चारण से क्यों मिलते हैं? ईरान में उस समय भी स्कूलों में यही पढ़ाया जाता था कि आर्यों का एक समूह ईरान की ओर आया और यहीं बस गया। ''इसलिए अपने नाम पर उन्होंने इस देश का नाम इरान रखा और हम उन आर्यों की संतान हैं।''

डेविड फाली ने अपने ग्रंथ 'द मिथ आफ द आर्यन इन्वेजन 'इण्डिया' में लिखा है कि आर्यों के भारत में कहीं बाहर से प्रवेश करने की बात निराधार है और उन्नीसवीं सदी के इतिहासकारों ने यह मिथ्या तर्क सिद्ध करने के लिए तथ्यों को तोड़ा मरोड़ा है। स्वयं स्वामी दयानन्द इस बात से पूर्ण रूपेण अवगत थे कि अंग्रेजों ने भारत में अपने आगमन को तर्क पूर्ण सिद्ध करने के लिए मिथ्याकरण की एक पूरी लॉबी तैयार की थी। महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत रहा था कि आर्य इसी देश के मूल निवासी थे और अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महाभारत काल से लेकर मुसलमानों का शासन प्रारंभ होने तक अर्थात अब से 5000 वर्ष पूर्व से लेकर आठ सौ वर्ष पूर्व तक दिल्ली पर शासन करने वाले सभी आर्य सम्राटों के नाम तथा उनके शासन काल दिए हैं। युधिष्ठिर से लेकर महाराज यशपाल तक 124 राजा हुए थे जिन्होंने कुल 4157 वर्ष नौ महीने राज्य किया। महाराज युधिष्ठिर के पहले बहुत से सम्राटों के नाम महाभारत में स्वयं आए हैं। इस से पूरी तरह प्रमाणित होता है कि आर्य सदैव इसी भूमि पर रहे हैं, बाहर से नहीं आए हैं, बाकि दूर सुदूर के देशों तक अपनी भौगोलिक सीमाओं का विस्तार करते रहे हैं। सच है भारत मात्र भूगोल नहीं हैं, भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं है, अपने में एक समूचा विश्व है संस्कृत योरोपीय भाषाओं की जननी है, भारतीय विरासत के अनेक तत्व दक्षिणपूर्वी एशिया, सोवियत संघ और मध्य एशिया आदि देशों में छितरे फैले हैं। भारत एक विशाल सांस्कृतिक दुकाई हैं, मात्र सिमटी भौगोलिक सीमाएँ नहीं। आज का हमारे देश का कटा–फटा, क्षत–विक्षत मानचित्र भारत की आत्मा को बाँध नहीं सकता है और अनेक सुदूर देशों में विद्यमान विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति के अवशेषों, भग्नावशेषों, स्मृतिचिह्नों व रीति–रिवाजों के आधार पर यह भ्रामक प्रचार असत्य लगता है कि हम बाहर से आए हैं और इस देश की मिट्टी के लिए पराए हैं।

क्रमशः

ए–1802 पंचशील हाईट्स,
महावीर नगर, कांदिवाली (प.)
मुंबई – 400067
मो. 9820215464

गतांक से आगे

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

एक दिन अचानक कारोबार का एक फार्मूला हाथ लग गया। कारोबार चल निकला। पति से सैकड़ा, हजार, लाख, करोड़ पति बन गए। व्यापारिक व्यस्तता बढ़ती चली गई। स्वाध्याय तो स्वतः ही छूट गया। संयमित जीवन से देदीप्यमान काया, स्थूल होती चली गई। वेद ज्योति से प्रदीप्त आभामण्डल तिरोहित हो गया। धन वैभव जायदाद को सुरक्षित रखने की कामना ने माथे पर चिंता की लकीरें डाल दीं। वही चिंता जिसे सन्तवाणी में मृत्यु से अधिक पीड़ादायिनी निरूपित किया गया है। कनपटी के बाल सफेद हो गए। आयु वार्धक्य की ओर तीव्रता से बढ़ चली।

बेटों ने कारोबार सम्हाल लिया था। धर्मपत्नी मंदिरों के चक्कर लगाने लगी। विभिन्न देवी–देवताओं के दर्शन लाभ की कामना उसे तीर्थों की यात्रा करने से ही फुरसत नहीं देती। उसे परलोक सुधारने का सुनहरी अवसर जो प्राप्त हो गया था। बहुएँ, किटी–पार्टी, मनोरंजन के विभिन्न कार्यक्रम टी.वी. के काल्पनिक मसालेदार सीरियलों में उलझ गईं। किचन तो बावर्ची के हाथ पहुंच चुका था। नाती–पोते पिजा नूडल्स के शौकीन हो गए। उनके खान–पान, शिक्षा–दीक्षा से मुक्ति। सबसे महंगे विद्यालयों में प्रवेश दिला दिया।

बावर्ची भोजन का थाल, प्रस्तुत कर हाथ बांध कर खड़ा हो जाता। कुछ बोलता नहीं कुछ पूछता नहीं कि खाना कैसा लग रहा है। कम क्यों खा रहे हो? कुछ और तो लो। अजीर्ण–एसिडिटी ने घेर लिया है। खाना रुचिकर नहीं लगता। दो–चार कौर में समाप्त। बावर्ची–खानसामा थाली उठा कर चल देता है। डायबिटीज, ब्लड प्रैशर ने भी घेर लिया है। आर्थिराइट्स भी जोर पकड़ने लगा है। मुहमाँगी सेवा शुल्क से भी कहीं ज्यादा निश्चित समयावधि में मिलने के कारण चिकित्सक भी प्रसन्न। फोन मिलने पर तत्काल पहुँच जाते। चूरण–चटनी लिख देते उनके जाने पर सेठजी बम्बई स्थित स्पेशलिस्ट को फोन कर बीमारी और दवाई बताते। स्पेशलिस्ट आश्वस्त था कि परिस्थिति के अनुकुल दवाई देकर मेडिकल कालेज का प्रोफेसर इलाज कर रहा है, ठीक इलाज कर रहा है। लेकिन यदि बात उतनी रह जाएगी तो उसकी आय तो मारी जाएगी न! कुछ नाम बदल कर वही दवा की एक या दो गोली बढ़ाने का सुझाव दिया जाता। पुनः स्थानीय डाक्टर से परामर्श किया जाता। उसकी सहमति से दोनों दवाएँ चलतीं। सेठजी के स्वास्थ्य में थोड़ा–बहुत सुधार हो जाता। काम की व्यस्तताएँ हावी हो जाती।

सेठ जी (पूर्व ब्राह्मण देवता) मसनद पर कमर टिकाए अधलेटे पड़े थे। दिन भर की खरीदा–बेचा की फोन घंटियाँ बन्द हो चुकी थीं। सब लोग जा चुके थे। सूर्यास्त हो रहा था। सेठजी तन्द्रावस्था में चले गए। मन ने उन्हें यौवन काल में पहुँचा दिया। पत्नी भोजन रख कर सामने बैठी रहती। बार–बार आग्रह करती कि यह खाओ, वह खाओ। अभी खाया ही कुछ नहीं। जब वह समझ लेती कि भोजन ठीक से कर लिया है तब बाद में भोजन करती। अब महीनों दर्शन नहीं होते। बेटे–बेटियों, बहुओं पोते–पोतियों को फुरसत ही नहीं कि दस मिनट पास आकर बैठें। व्यापार की चिंताएँ अभी भी जान दबा रही हैं। ध्यान गया। कहाँ किस चक्कर में फँस गया। चक्कर का ध्यान आते ही माँ लक्ष्मी देवी का स्मरण हो आया। स्मरण किया। लक्ष्मी देवी प्रकट हो गई। पूछा

वत्स! क्या चाहिए?

मुक्ति।

किससे?

आपके पास से मुक्ति चाहिए?

क्यों? क्या कुछ कमी रह गई है?

नहीं। कमी कुछ भी नहीं रही। सब कुछ बहुत अधिक है।

फिर?

माँ सरस्वती की सेवा में जाना चाहता हूँ।

क्यों?

वहाँ सुख–शान्ति आत्मा को चैन था। अब सब समाप्त हो गया है। कोई परिजन बात करने को तैयार नहीं। व्यापारी वर्ग, राजनेता सब ही पुत्रों से सम्पर्क करते हैं। माँ मुझे अपने से मुक्ति दे दो। बुढ़ापा सुधारना चाहता हूँ। अपना कल–अगला जन्म सुधारना चाहता हूँ।

लक्ष्मी देवी ने दृढ़तापूर्वक आंखें लाल कर कहा– यह नहीं हो सकता। तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मेरे रूपजाल में फँसकर मुक्ति मृत्यु पूर्व नहीं। लक्ष्मी अन्तर्धान हो गई। सेठजी मसनद से नीचे लुढ़क गए। प्राण–पखेरू अनन्त में विलीन हो गए।

(टिप्पणी–स्वरचित आख्यान विषय को आत्मसात् कराने के लिए प्रस्तुत किया है। वेद की तुला पर मत तौलिए।)

इन छः मन्त्रों के आशय को सरल–सपाट भाषा देने का प्रयास कर रहा हूँ।

मन को हृतप्रतिष्ठं मदजिरं, जविष्ठं निरूपित किया गया है। आमाशय (पेट) के ऊपर, दोनों पसलियों के संगम स्थल पर हृदय गुफा में जीवात्मा के साथ मन भी प्रतिष्ठित है अर्थात् मन जीवात्मा (शुद्ध चैतन्य आत्मा नहीं) का अनिवार्य अंग है। प्राणियों के भीतर आत्मा का साथ होने से अजिर नाश रहित है। जविष्ठं–अत्यन्त वेगवान है। गति का माप प्रकाश है। प्रकाश एक मिनट में 3(तीन) लाख किलोमीटर जाता है।

मन की गति इससे भी कहीं अधिक है। मन अत्यधिक चंचल है। निरन्तर डोलता रहता है। जाग्रत व स्वप्न अवस्था में दूर–दूर तक जाता है। अपना कल्पना लोक भी बनाता है।

इन्द्रियों का प्रकाश है। पाँच ज्ञानेन्द्रियों मन और बुद्धि इन सात साधकों से ज्ञान–विज्ञान व शुभकर्म रूप यज्ञ कराने वाला है। चारों वेद–ऋक्, यजुः, साम और अथर्व का आगार–भण्डार गृह है इसके बिना किंचित जीवात्मा को परमात्मा से मिलाकर 'त्रिकालज्ञ' बनाता हैं कतिपय विभूतियों से संयुक्त किया है। इसीलिए प्रत्येक मन्त्र का समापन – तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु से किया है जिसका अर्थ है–हे प्रभु! मेरा मन शुभ संकल्प विचारों वाला हो।

महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए मन्त्र के अंतिम वाक्यांश–शिवसंकल्पमस्तु का अर्थ गहन अध्ययन, चिंतन व मनन की अपेक्षा रखता है–

1. मेरा मन शिव संकल्प अपने और दूसरे प्राणियों के लिए कल्याण का संकल्प करने वाला हो। किसी की हानि की इच्छा कभी न हो।

2. मेरा मन धर्म करने की इच्छा से युक्त होकर अधर्म को सर्वथा छोड़ दे।

3. मेरा मन शुभ गुणों की इच्छा कर, दुष्ट गुणों से पृथक रहे।

4. मेरा मन योग–विज्ञान युक्त होकर, अविद्या आदि क्लेशों से दूर रहे।

5. मेरा मन अविद्या का अभाव कर, सदा विद्या प्रिय रहे।

6. मेरा मन इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक कर धर्मपथ पर सदा चलाया करे।

नोट–अविद्या, अनित्य, संसार आदि में नित्य–विपरीत बुद्धि 2.अशुचि–मलमय स्त्रियादि, मिथ्या भाषण चोरी आदि – अपवित्र में विपरीत बुद्धि, 3. अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख में सुख बुद्धि 4. अनात्मा में आत्मबुद्धि करना।

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ब्रह्मर्षि वायु को प्रदत्त यजुर्वेद के ये छः मंत्र क्या विश्वव्यापी समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ हैं? यदि उत्तर हाँ में है तो पूरक प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या ये प्रार्थना मंत्र–

1. मानवीय समुदाय के उन लोगों के लिए भी उपलब्ध हित साधक हैं जो वेदोक्त परमात्मा को नहीं मानते, वेदवाणी को उसकी वाणी नहीं मानते?

2. विश्वव्यापी जिहादी उन्माद के समर्थकों को भी उपलब्ध हैं जो मताग्रही होकर सीरिया, ईराक व अन्य शान्तिप्रिय देशों में रक्त का नंगा नाच खेल रहे हैं?

3. नारी जाति को मर्मान्तिक पीड़ा देने वाले तीन तलाक व 'हलाला' के समर्थक मौलवी–मुल्लाओं को भी उपलब्ध है जो अय्याशी व धन लोलुपता का बाजार गर्म किए बैठे हैं?

4. भ्रष्टाचारियों को भी उपलब्ध है जो स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पिछले 70 वर्षों से राष्ट्रधन का दोहन अपने हितों के लिए कर रहे थे और अभी भी कर रहे हैं? इस वर्ग में व्यापारी राजनेता, शासकीय कर्मचारी सभी सम्मिलित हैं?

5. निर्भया काण्ड, तन्दूर काण्ड, निठारी काण्ड, प्रद्युम्न काण्ड जैसे नीचतम घोरतम काण्ड को सम्पन्न करने वाले दानवों को भी प्राप्त है?

6. क्या आसाराम, पुत्र नारायणस्वामी, रामपाल, भीमानन्द, ओशो, रामरहीम को भी उपलब्ध है जो धर्म की आड़ में वित्तैषणा लोकेषणा के साथ नारी उत्पीड़न–व्यभिचार में आकण्ठ डूबे हुए थे?

7. क्या धर्म के नाम पर अपने को पुजवाने वाले सत्य साईं बाबा, बैंगलौर, चाँदमियाँ उर्फ साईं बाबा, नासिक निर्मल बाबा व राधे माँ को भी उपलब्ध होगी। इनमें से अनेक धर्म के साथ धन का भी दोहन कर रहे थे।

8. क्या उस सर्वसुविधाओं से वंचित

पूर्णतया अशिक्षित भूखे–नंगे मानव समुदाय जो झुग्गी, झौंपड़ियों, रेलवे पुलों के नीचे, सड़कों पर खुले आसमान के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर हैं। भीख चोरी, जेबकाटना, चाकू चलाना, जिनका धंधा है। जिनको अपमानित करने के लिए 'स्लम डॉगमिलेनियर' फिल्म बना कर आस्कर अवार्ड दिलवा कर विश्वव्यापी अपमान का तोहफा भेंट किया गया था।

इस वर्ग को क्या मालूम ईश्वर क्या है?

क्या कार्य करता है। शिवसंकल्प मंत्र क्या होते हैं? उन्हें तो बस, आहार, निद्रा, भय, मैथुन वाला पशुवत जीवन जीना है। उसी में मरना है। पुर्नजन्म भी उसी में होना सुनिश्चित।

9. तात्पर्य यह हुआ कि परमात्मा की व्यवस्था सभी धर्मावलम्बियों/मतावलम्बियों के लिए एक है। सब पर लागू होती है। ईसाई, इस्लामी, कुरानी, पौराणिक, बौद्ध, जैन, सिख सब पर। धर्म देश भाषा कोई भी क्यों न हो?

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने ईसाई व इस्लाम मत की समीक्षा करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्टतया पुरजोर तरीके से उल्लेख किया है कि इन मतों के अनुयायी, समर्थक व प्रचारक अपने अतार्किक, सृष्टि नियमों के सर्वथा विपरीत मतों को त्याग कर, वेदमार्ग को अपनाएँ। महर्षि ने अत्यन्त आग्रहपूर्वक उपरोक्त वचन लिखते हुए इस बात का भी स्पष्ट उल्लेख किया है कि 'मताग्रह' व 'परम्परा के निर्वहन' के लिए ये लोग ही अपना मत छोड़ वेदमार्ग अनुसरण करने से वंचित है। प्रश्न उठता है कि इन मंत्रों से लाभान्वित होने का पात्र कौन है?

उपरगणित तथा कथित नराधम – जिनमें भ्रष्टाचारी समुदाय भी शामिल है, परमात्मा की आवाज को मार कर दुराचार में प्रवृत्त रहने के कारण, स्वयं ही अनिच्छुक अपात्र हो गए।

मताग्रही ईसाई, इस्लामी, पुराणी, सिख, जैन आदि को मानने वाले जिनकी वेद सम्मत ईश्वर में आस्था ही नहीं है उसके मन्तव्यों को अपने मनोनुकूल तोड़ कर आचरण करने वाले भी कभी इन मंत्रों का पाठ कर लाभान्वित नहीं होना चाहेंगे।

फिर बचे–कौन? वे ही लोग जो वेदोक्त ईश्वर को उसकी व्यवस्थाओं को मानते हैं। बहुसंख्यक पौराणिक–मूर्तिपूजक भाई जिनकी पाप–पुण्य की अवधारणा में आस्था है, विश्वास है और मानते भी हैं। ऐसे करोड़ों जन के लिए इन मंत्रों से ईश्वर से प्रार्थना करना निश्चित रूप से लाभदायक होगा। अकलुषित मन से प्रार्थना उपासना करने का सबसे बड़ा लाभ आत्मिक बल का बढ़ना है। छत्रपति शिवाजी महाराज हमेशा कहा करते थे– अगर मनुष्य के पास आत्मबल है तो वह समस्त संसार पर अपने हौसले से विजय पताका लहरा सकता है। फील्ड मार्शल मानेक शा ने पाकिस्तानी सेना का आत्मबल/मनोबल तोड़ कर बिना एक गोली भी चलाए एक लाख पाकिस्तानी सेना से आत्मसमर्पण करा लिया था।

आइए, हम इन मन्त्रों का चिन्तन–मनन करें, आत्मबल बढ़ाएँ। स्वजीवन सुधारें। श्रेयमार्ग के पथिक बनें।

22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर
ग्वालियर पिन 474001 म.प्र.

☞ पृष्ठ 04 का शेष

ईश्वर सृष्टि की रचना मुख्यतः ...

है। जब आत्माओं को स्वयं के होने का ज्ञान होने लगा तो उनके स्वाभाविक गुण भी प्रकट होने लगे। ऐसे ही दो स्वाभाविक गुणों 'इच्छा' व 'सुख' को अनुभव करने की सामर्थ्य' के चलते वो आत्माएँ कुछ 'सुख' प्राप्ति की 'इच्छा' करने लगती होंगी। अब परम दयालु ईश्वर उन्हें अन्य अन्तःकरणादि साधन बनाकर दे देता होगा जिनकी सहायता और अपने 'प्रयत्न' आदि स्वभाव के चलते वो आत्माएं सुख प्राप्ति को लक्ष्य कर अपने कर्माशय के अनुसार कर्म व भोग आदि में प्रवृत हो जाती होंगी। अब उनके लिए एक उचित व्यवस्था बनाए रखने की दृष्टि से ईश्वर एक राजा (या पिता) की तरह व्यवस्थापक बन जाता होगा। क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है और परम दयालु है, इसलिए आत्माओं के इच्छा आदि गुणों को जानने के कारण उन्हें अहंकार से युक्त करना ही उसकी दयालुता का परिणाम मान सकते हैं और स्वयं ही सब व्यवस्था करने व चलाने में अपनी सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता के कारण वह स्वयं ही ये (बिना किसी के द्वारा बनाए जाने से) सब प्राणी व अप्राणी–जगत का राजा माना जा सकता है।

टिप्पणीकर्ता 2 – आपने अच्छी विवेचना की है। (1) ईश्वर प्रलयावस्था में सुषुप्ति में पड़ी जीवात्माओं को जगाकर पुनः जन्म इसलिए देता है कि इससे पूर्व जन्मों में किए हुए कर्मों का फल दिया जा सके और मानव देहस्थ जीवात्माओं को नए कर्म करने का अवसर दिया जा सके। (2) सृष्टि को बनाकर ईश्वर स्वयं के ज्ञान, कर्तृत्व शक्ति आदि सामर्थ्य को सार्थक कर सके यह भी एक उद्देश्य माना गया है। (3) ईश्वर अपने विशिष्ट गुणों एवं सामर्थ्य आदि के कारण अनादि काल से राजा है– जड़ प्रकृति और अल्पज्ञ–अल्प शक्तिमान् जीव से ईश्वर श्रेष्ठ होने से।

मूल लेखक – जी! आपके दूसरे बिंदु पर मैं थोड़ा सा अलग तरह से सोचता हूँ। मेरे विचार से आत्माओं के कल्याणार्थ सृष्टि बनाने से ईश्वर के ज्ञान, कर्तव्य शक्ति आदि सामर्थ्यों को सार्थकता प्राप्त होती है, न कि इन सामर्थ्यों को सार्थक करने के लिए सृष्टि की उत्पत्ति की जाती है। यदि थोड़ी देर के लिए हम यह कल्पना कर लें कि सभी आत्माएँ मोक्ष को प्राप्त कर चुकी हैं तो इस स्थिति में भी ईश्वर की सब शक्तियाँ उसके पास होते हुए भी वह केवल सार्थक करने के उद्देश्य से सृष्टि उत्पत्ति नहीं करेगा।

टिप्पणीकर्ता 2 – सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने इसी सम्बन्ध में लिखा है– *"जो तुम से कोई पूछे कि आँख के होने में क्या प्रयोजन है? तुम यही कहोगे देखना तो जो ईश्वर में जगत् की रचना करने का विज्ञान, बल और क्रिया है उसका क्या प्रयोजन; बिना जगत् की उत्पत्ति करने के? दूसरा कुछ भी न कह सकोगे। और परमात्मा के न्याय, धारण, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते हैं जब जगत् को बनाए। उसका अनन्त सामर्थ्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और व्यवस्था करने ही से सफल है। जैसे नेत्र का स्वाभाविक गुण देखना है वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है।"* (अष्टम समुल्लास)

मूल लेखक – जी! मैं मानता हूँ कि ईश्वर के इस विज्ञान, बल और क्रिया प्रयोजन जगत की रचना करने का प्रयोजन या उद्देश्य बद्ध आत्माओं को असंख्य पदार्थ देकर उनका परोपकार करना है। अतः यदि कोई बद्ध आत्मा न हो या जगत् की उत्पत्ति से उनका परोपकार न होता तो ईश्वर जगत् बनाने के स्थान पर अन्य किसी तरह से उनका परोपकार करेगा और इस तरह सूक्ष्मता से देखें तो मेरी दृष्टि में ईश्वर का स्वाभाविक गुण जीवों का उपकार करना है ना कि अनिवार्य रूप से जगत ही बनाना। विषय को अनावश्यक रूप से अधिक खींचने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

टिप्पणीकर्ता 2 – जी, आपका निष्कर्ष ठीक प्रतीत होता है। आप विचार मन्थन करते हैं और जो लिखते हैं इससे सूक्ष्मता की ओर विषय को आगे ले जाने में मुझे सहायता मिलती है। एतदर्थ आपको बहुत धन्यवाद!

मूल लेखक – यह आपका बड़प्पन है, जी। धन्यवाद मेरी जिज्ञासाओं को सम्यक दिशा देने के लिए।... हम विद्वान नहीं, बस सब विद्यार्थी हैं। बस खुले मन व ईमानदारी से अपने विचार रखने का प्रयास करते हैं।

8–17 टाऊन शिप नर्मादा नगर
जिला– भरूच गुजरात –392015
मो. 09879528247

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना

प्रवेश सूचना

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, (पंजाब) दूरभाष – 9814629410 जोकि पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल है में छठी कक्षा में (आयु+9 से –11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/– रुपए) भरकर 31.03.2018 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएँ। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश–परीक्षा 01 अप्रैल 2018 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

पत्र/कविता

श्री राम के पुत्र पुत्रियो, जागो धनुष उठाओ तुम

श्री राम की महिमा गाओ, सकल विश्व के नर–नारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।
माता–पिता गुरु, वृद्धों की, सेवा रघुवर करते थे।
दुखिया दीन अनाथजनों की, पीड़ाएँ वे हरते थे।।
चरित्रहीन अन्यायी पापी, श्री राम से डरते थे।
वीर सदाचारी रघुनन्दन, जग में निडर विचरते थे।।
प्रजापालक धर्म धुरन्धर, दयावान थे बलधारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।
बाली, रावण, कुम्भकरण से, दुखी विश्व यह सारा था।
ऋषियों–मुनियों विद्वानों का, जग में नहीं सहारा था।।
मारीच त्रिसरा और सुबाहु, करते थे खल मन मानी।
विश्वमित्र अगस्त्य अत्रीय, व्याकुल थे योगी ज्ञानी।।
श्री राम ने धर्म समझकर मारे थे अत्याचारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।
रघुकुल भूषण श्री राम जी, अगर नहीं जग में आते।
यह भारत, गारत हो जाता, सब ईश्वर भक्त कष्ट पाते।।
ईश्वर भक्त सज्जनों से था, श्री राम को प्यार सुनो।
धर्म, कर्म का पुण्य दान का, उनको रहा विचार सुनो।।
निषाद राज निर्धन खेवट से, श्री राम की थी यारी।।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।
उग्रवाद आतंकवाद अब, जग में बढ़ता जाता है।
दानव दल हुंकार रहा है, कष्ट सकल जग पाता है।।
छीना झपटी मची हुई है, धर्म, कर्म सब भूल गए।
नर नारी बन गए स्वार्थी, सत्य से हो प्रतिकूल गए।।
छुआ–छूत की ऊंच–नीच की, पनप गई है बीमारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।
श्री राम के पुत्र–पुत्रियो, जागो धनुष उठाओ तुम।
भ्रष्टाचार की लपटों से, जलता संसार बचाओ तुम।।
अर्जुन भीम बनो दुष्टों का वीरो! वंश मिटाओ तुम।
सकल विश्व को आर्य बनाओ, स्वर्ण धरा पर लाओ तुम।।
"नन्दलाल" थी श्री राम को, प्रजा प्राणों से प्यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

पं. नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो. बहीन, पलवल (हरि.)
मो. 9813845774

'आर्य जगत्' को इतने अधिक लोग पढ़ते हैं?

सदा सत्य–पथ पर चलने और चलाते रहने वाले अपने आर्यसमाजी बंधुओं के बीच में ही आर्य–विचारों के प्रचार करने को मैं दिन में टार्च जलाने जैसा अनावश्यक मानता हूँ। इसीलिए मैं अंधेरी गुफाओं में छुपे–चिपके हुए सिंह, भालू, गीदड़, चमगादड़, के बीच ही वैदिक सूर्य के प्रकाश को अपने आंइने से यथा संभव प्रतिबिंबित करते रहने की कोशिश में लगा रहता हूँ।

देश की आजादी हेतु जिस तरह आजाद, भगत, बिस्मिल्लादि वीरगण तो स्वदेश के अंदर से लगे हुए ही थे, इसी स्वातंत्र्य–समर–यज्ञ को वीर उधम सिंह, मदन लाल, रासबिहारी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस आदि वीर गण देश के बाहर से कर रहे थे। उसी तरह वेद–प्रचार सिर्फ आर्यसमाज के अंदर से ही नहीं, बल्कि बाहर से भी हो, इसीलिए मैं भी आर्येतर पत्र–पत्रिकाओं में ही ज्यादा लिखना पसंद करता हूँ। किंतु जब अपने आर्य बंधुओं से ही कोई निवेदन या शिकायत करना हो, तो आर्य–पत्रों का ही सहारा लेना पड़ता है। इसी क्रम में मैं 'आर्यजगत्' में भी अपना कुछ–कुछ विचार रखने लगा। किंतु इसमें छपे हमारे हर लेख पर देश के कई भागों से हर वर्ग के प्रबुद्ध जनों के समर्थन व विरोध की इतनी प्रतिक्रियायें मिलने लगी, तो मुझे ताज्जुब होने लगा कि 'आर्य जगत्' को इतने अधिक लोग पढ़ते हैं? मैं नहीं जानता था कि पौराणिक– नेता भी आर्य जगत् को ही प्रमुखता देते होंगे और मुझसे पूछने भी लगेंगे कि मंदिर का पुजारी होकर भी आप आर्य समाजियों–स्व स्वधर्म (पाखंड) विरोधी लेख क्यों नहीं देते? (ताकि कोई दूसरा पुस्तैनी पाखंडी वहाँ विराजित हो और हमारे 'धार्मिक ठग–कंपनी' के नेटवर्क से जुड़ कर यजमानों की बुद्धि पर ताला लगाते रहे!?) यानि यजमानों–सीधे–सच्चे हिंदुओं को मूर्ख बना कर उसकी पाकेटमारी करता रहे?

मुझे भी लगता है कि संयोग या दुर्योग से सचमुंच ही मैं पौराणिक राक्षसों (पंडितों–पुरोहितों) के हिरण्यकश्यपी समाज में प्रहलाद बनकर बेमेल–सा ही टपक पड़ा हूँ। जो इन लोगों को न मुझे उगलते बन रहा है, न निगलते ही। मैं भी आत्माहुति की बलिवेदी पर पाखंडों से खेलने और लड़ने का खूब आनंद ले रहा हूँ। क्योंकि मेरे विरोधियों के पास सिर्फ स्वार्थ भरा पाखंड है, जबकि मेरे पास वेद का सत्यार्थ है, इसीलिए विजयप्रद–सत्य हमारे साथ है!

ऐसे में आर्यजगत् से हमें मिल रहे अभूतपूर्व–आत्मीय उत्साहवर्द्धन हेतु सभी पाठकों को कृतज्ञता पूर्वक शत–शत साधुवाद!

आर्य प्रहलाद गिरि
आसनसोल
9735132360

अयोध्या-विवाद ऐसे हल हो

अयोध्या–विवाद फिर टल गया। सर्वोच्च न्यायालय ने तारीख आगे बढ़ा दी। अभी एक लाख पृष्ठ के दस्तावेज हिंदी, उर्दू और फारसी से अंग्रेजी में होने हैं। मुझे नहीं लगता कि रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद का मामला अदालतें हल कर सकती हैं। यदि वे फैसला दे भी दें तो भी उसे लागू कौन कर सकता है ? इस नाजुक और राष्ट्रीय महत्व के मसले को अदालत के मत्थे मारने का मतलब यह भी है कि हमारे सारे नेता नाकारा हैं, सारे साधु–संत और मुल्ला–मौलवी नादान हैं, सारे समाजसेवी और बुद्धिजीवी निष्क्रिय हैं। यह मामला कानूनी है ही नहीं और आश्चर्य है कि सब लोग कानून की शरण में चले गए हैं।

खुद सर्वोच्च न्यायालय की राय थी कि इसे बातचीत से हल करें। इस मामले से जुड़े सभी पक्षों से 1992 में मेरी बात चल रही थी। मेरे सुझाव पर प्रधानमंत्री नरसिंहरावजी और विश्व हिंदू परिषद के मुखिया श्री अशोक सिंहल ने सितंबर में होनेवाली कार–सेवा को तीन महिने तक टाल दिया था। उस समय का मेरा अनुभव यह था कि हिंदू, मुस्लिम और सरकार तीनों पक्ष इसे बातचीत से हल करने के पक्ष में थे लेकिन 6 दिसंबर के हादसे ने सारी तैयारी पर पानी फेर दिया। अब भी इसके हल के लिए कई सुझाव आए हैं लेकिन मेरी राय में जो सबसे अच्छा, व्यावहारिक और सर्वमान्य सुझाव हो सकता है, वह है, पुणें के डॉ. विश्वनाथ कराड़ का, जिसका सक्रिय समर्थन पूर्व मंत्री श्री आरिफ मुहम्मद खान और मैं भी कर रहा हूं। हम तीनों की राय है कि रामजन्म भूमि पर राम का भव्यतम मंदिर बने और 60–65 एकड़ जमीन पर सभी प्रमुख धर्मों के पूजा–स्थल बन जाएं। अयोध्या की यह 70 एकड़ जमीन विश्व–तीर्थ बन जाए। विश्व–सभ्यता को यह हिंदुत्व का अनुपम उपहार होगा। सर्व–धर्म समभाव का यह सगुण–साकार रुप होगा। यह विश्व का सर्वोच्च पर्यटन–केंद्र बन सकता है। ऐसी अयोध्या सचमुच अयोध्या बन जाएगी। न कोई हारेगा न जीतेगा। युद्ध तो होगा ही नहीं। सांप्रदायिक सदभाव की नई नींव पड़ेगी। यह ऐसी भव्य और दिव्य अयोध्या बनेगी कि स्वयं राजा श्रीराम इस अयोध्या में अवतरित हो जाएं तो वे भी इसे देखकर गदगद हो जाएंगे।

डॉ. वेद प्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

****

डी.ए.वी. लक्कड बाजार शिमला में स्वामी दयानन्द जी की जयन्ती का आयोजन

धर्म के वास्ते सर्वस्व जो बलिदान करते हैं, युगों तक लोग उनके त्याग का सम्मान करते है। इन्हीं विचारों को सार्थक करता है स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र। स्वामी दयानन्द जी की जयन्ती के अवसर पर डी.ए.वी. लक्कड़ बाजार में आर्य युवा समाज के बैनर तले अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। लघु नाटिका के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी के चरित्र को प्रदर्शित किया गया। स्वामी दयानन्द जी का मानना था कि सम्पूर्ण देश को हिन्दी भाषा ही एक बना सकती हैं इन्ही विचारों को आगे बढ़ाते हुए हिन्दी भाषा के महत्त्व पर लघुनाटिका प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर भजन–गायन का भी आयोजन किया गया तथा भाषण के माध्यम से स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

डी.ए.वी. का पारितोष यू.एस. पिट्सबर्ग में करेगा टीम इण्डिया का प्रतिनिधित्व

डी.ए.वी. मल्टीपर्पज स्कूल सोनीपत के बाल–वैज्ञानिक पारितोष दहिया के द्वारा प्रस्तुत की गई "चाइल्ड सेफ वेब ब्राउजर" नामक प्रोजैक्ट को इन्टर नेशनल साइंस इंजीनियरिंग फेयर 2018 के लिए चयनित किया जाना न केवल पारितोष वरन विद्यालय की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार एवं इंडो यू.एस. फोरम व इण्टेल के द्वारा संयुक्त रूप से आई.आर.आई.एस. नेशनल साइंस फेयर 2017 का आयोजन किया गया। यह आयोजन मानिकशा सेण्टर नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित इस प्रतियोगिता में पूरे भारत से 1050 प्रतिभागियों ने अपने प्रोजैक्ट प्रस्तुत किए उनमें से 70 प्रतिभागियों को चुना गया तथा उनमें से भी टॉप 20 प्रोजैक्ट को टीम इण्डिया के लिए चयनित किया गया जो अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर भारत देश का प्रतिनिधित्व करेंगे। डी.ए.वी.विद्यालय से कक्षा ग्यारहवीं के पारितोष दहिया के "चाइल्ड सेफ वेब ब्राउजर" प्रोजैक्ट को यह अवसर मिला, वह हरियाणा से चुना जाने वाला एक अकेला बाल–वैज्ञानिक है जो न केवल सोनीपत वरन हरियाणा राज्य का अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर प्रतिनिधित्व करेगा।

पारितोष की मार्गदर्शिका विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती गीता दहिया ने बताया पारितोष अब यू.एस. जाने से पूर्व नई दिल्ली के मानिकशा सैण्टर ,मैपल दिल्ली के मैन्टरशिप कैम्प व पूना के आरसर में लगने वाले तीनों चरणों में भाग लेगा तथा यू.एस. में अच्छे प्रदर्शन की तैयारी करेगा।

श्री अविनाश भाई भट्ट बने टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी

आर्य समाज – जामनगर के मानद् मंत्री, जामनगर शहर के पूर्व मेयर, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा सौराष्ट्र जोन के मंत्री, श्री बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रमुख, इन्डियन रेडक्रॉस सोसाइटी, जामनगर ब्रांच, के कार्यकारिणी समिति सदस्य और भारतीय जनता पार्टी के पूर्व शहर उपप्रमुख, टंकारा रत्न श्री डॉ. अविनाशभाई भट्ट, का श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट– टंकारा के ट्रस्टी के रूप में सर्वसम्मति से चयन किया गया।

आर्य समाज – जामनगर के पदाधिकारियों, सदस्यों, श्रीमद्दयानन्द कन्या विद्यालय–जामनगर के प्राथमिक विभाग, माध्यमिक विभाग उच्चतर माध्यमिक विभाग के आचार्यों और समग्र स्टाफ ने गौरव और हर्ष का अनुभव करते हुए, श्री डॉ. अविनाशभाई भट्ट का हार्दिक अभिनन्दन किया।

सत्यव्रत सामवेदी को दी कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ की उपाधि

स्वतन्त्रता, सेनानी स्व. श्री छोटू सिंह आर्य एवं श्रीमती शारदा देवी की पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ से श्रद्धांजलि सभा प्रारम्भ हुई। अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान ने की। ट्रस्ट के "अष्टम् सम्मान समारोह" में श्री सत्यव्रत सामवेदी, जयपुर को "कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ" की उपाधि से सम्मानित किया गया। श्रीमती कमला शर्मा ने अभिनन्दन पत्र वाचन किया और स्मृति चिन्ह एवं शॉल ओढाकर 11 हजार रुपये भेंट स्वरूप प्रदान किए।

श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने कहा कि श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का व्यक्तित्व अपने आप में बहुत ही संघर्षशील रहा है।

श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री सत्यव्रत सामवेदी ने "आर्य कन्या संस्था" द्वारा अलवर को यज्ञमय बना देने की बात कही और आर्य समाज के साथ जुड़े अपने संस्मरणों को श्रोताओं के साथ साझा किया।

श्री अमर मुनि ने आदर सम्मान की परम्परा के बारे में कहा कि ये युवाओं में ऊर्जा भरती है।

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 21/22-03-2018

डी.ए.वी. कॉलेज बठिण्डा में [illegible] से प्रशासनिक भवन का उद्घाटन

डी.ए.वी.कॉलेज बठिण्डा में नवनिर्मित प्रशासनिक भवन का उद्घाटन वैदिक मंत्रोच्चारण व हवन यज्ञ से किया गया। इस शुभावसर पर सीनियर डिप्टी मेयर, बठिण्डा श्री तरसेम गोयल मुख्य अतिथि थे। श्री पी.डी.गोयल चेयरमैन, श्री के.के.नौरिया मैम्बर, महाविद्यालय के सेवानिवृत प्राध्यापक व सेवानिवृत गैरप्राध्यापकीय स्टॉफ ने शिरकत की। मंत्रोच्चारण से यज्ञ करते हुए ' सर्वे भवन्तु सुखिनः ' की कामना से यज्ञाग्नि में आहुतियाँ डालकर वैदिक परम्परा का पालन किया गया।

इस शुभावसर पर सीनियर डिप्टी मेयर, श्री तरसेम गोयल ने इस यज्ञ में शामिल होने पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा कि डी.ए.वी.संस्था सम्पूर्ण भारत में शिक्षा व समाज भलाई कार्यो में आगे रहकर उन्नति कर रही है। उन्होंने स्थानीय डी.ए.वी.कॉलेज की तरक्की में अपना योगदान देने का वायदा भी किया।

पी.डी.गोयल ने कहा कि महाविद्यालय के संरचनात्मक ढांचे के विकास का श्रेय कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा को जाता है।

परमपूजनीय स्वामी जी ने प्रार्थना का महत्त्व बताने के साथ–साथ सात्विक, तामसिक व राजसी शक्तियों के बारे में बताया और कहा कि कॉलेज प्राचार्य डॉ .संजीव शर्मा की सकारात्मक शक्तियों के कारण महाविद्यालय दिन दौगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है।

प्राचार्य डॉ .संजीव शर्मा ने कॉलेज के संरचनात्मक विकास के लिए प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि स्टाफ की बनी सब समितियों के शतप्रतिशत सहयोग पर ही कॉलेज की सफलता निर्भर करती है।

प्रो. वरेश गुप्ता ने श्री तरसेम गोयल, श्री पी.डी.गोयल, श्री के.के.नौरिया, महाविद्यालय के सेवानिवृत प्राध्यापक व गैर प्राध्यापकीय स्टॉफ व समस्त उपस्थिति का धन्यवाद किया।

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में यज्ञ से मनाया ऋषि बोधोत्सव

हंसराज महिला महाविद्यालय में ऋषि बोधोत्सव के शुभ अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। कॉलेज प्राचार्या प्रो. डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने इस सुअवसर पर सभी आर्य सज्जनों का स्वागत किया एवं बताया कि आज के दिन महर्षि दयानन्द जी को ज्ञान का बोध हुआ था जिस उपलक्ष्य में यह दिन ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि आज का दिन हमें आत्मबोध के रूप में भी मनाना चाहिए क्योंकि हमारे मन से बेहतर हमारा कोई मित्र नही है इसलिए हमें अपने मन से वार्तालाप कर मन की कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर अपनी प्रबलता को उजागर करना चाहिए।

डॉ. निधि कोछड़ ने शिवरात्रि के पर्व तथा आर्य समाज के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस शुभ अवसर पर आर्यरत्न पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा फोन कॉल के माध्यम से सर्ब डी.ए.वी. परिवार को ऋषि बोधोत्सव की मुबारकवाद दी। डॉ. प्रेम सागर–संगीत गायन विभागाध्यक्ष ने इस अवसर पर "मुझमें ओ३म्––तुझमें ओ३म्" भजन प्रस्तुत कर अपने श्रद्धाभाव अर्पित किए। डॉ. कंवलदीप कौर ने भी डी.ए.वी. संस्था के इतिहास के प्रति श्रद्धाभाव प्रस्तुत किए एवं प्रगति पथ पर अग्रसर रहने की प्रेरणा दी।

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन फिरोज़पुर छावनी में दो-दिवसीय संगोष्ठी आयोजित

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन फिरोज़पुर छावनी में प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा की अध्यक्षता में आई. सी. एस. आर. द्वारा प्रायोजित, "अकादमिक पुस्तकालय का भविष्य" विषय पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर के पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. एच.एस. चोपड़ा इस सेमीनार के मुख्यातिथि थे।

संगोष्ठी का प्रारंभ ज्योति प्रज्ज्वलन व डी.ए.वी. गान से किया गया। प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। अपने सम्भाषण में उपस्थिति को पुस्तकालय की महत्ता एवं उसकी भूमिका से परिचित करवाया।

डॉ. एच. एस. चोपड़ा ने वक्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि ऐतिहासिक संदर्भ में पुस्तकालय ने विकास का एक लंबा सफर तय किया है। वर्तमान समय में सूचना एवं तकनीक में नया अध्याय के रूप में जुड़ गया है। इसलिए इस नए परिवर्तन के साथ चलने की आवश्यकता है। यदि हमने इस परिवर्तन को उपेक्षित किया तो हमारे पिछड़ जाने की संभावना बहुत रहेगी।

दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर के सहायक लाइब्रेरियन डॉ. कुलवीर कौर ने की। इस सैशन में श्री अनूप सिंह, श्री हरीश गुलाटी, श्री अमरीक सिंह, श्रीमति भावना शर्मा और श्रीमति डॉली शर्मा ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इन सभी शोध पत्रों में पुस्तकालय के भविष्योन्मुखी सीमाओं एवं संभावनाओं पर गंभीर चर्चा की गई तथा डॉ. कुलवीर कौर, श्रीमती पूजा चुग और श्रीमती शरणदीप कौर ने कानून के अनुशासन संबंधित पुस्तकों एवं क्लाऊड कंप्यूटिंग के विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। मंच संचालन की भूमिका पंजाबी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. चन्दनप्रीत सिंह ने निभाई। अंत में सभी प्रतिभागियों को सर्टीफिकेट प्रदान किए गए तथा डॉ. एच.एस. चोपड़ा को कॉलेज की ओर से सम्मान किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**